सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-27 अंक-10 23 मई से 7 जून, 2012 मुख्य संपादक - कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती मूल्य : 2 रुपये

एसयूसीआई(सी) पार्टी में जारी है चरित्र व इंसानियत की जीवन्त साधना

–शहीद मीनार की सभा में कॉमरेड प्रभाष घोष

(24 अप्रैल को पार्टी की पश्चिम बंग राज्य कमेटी के आह्वान पर कोलकाता के शहीद मीनार मैदान में आयोजित सभा में महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष का यह भाषण बांग्ला मुखपत्र गणदाबी में प्रकाशित हुआ था जिसका हिन्दी अनुवाद यहाँ दिया जा रहा है।)

आप जानते हैं हर साल हम 24 अपैल को हमारी पार्टी के स्थापना दिवस पर जनसभा करते हैं। मैं और मेरे सहयोद्धा पोलिट ब्यूरो सदस्य व केन्द्रीय कमेटी के सदस्य इस दिन इस राज्य सहित भारत के 23 राज्यों में इस तरह की सभाओं में हमारे शिक्षक महान मार्क्सवादी चिन्तनकार कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं के आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय व राज्य स्तरीय समसामयिक समस्याओं के बारे में हमारा विचार विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं। पिछले साल इस विधानसभा चुनावों के अन्तिम दौर में पार्टी के कार्यकर्ताओं के व्यस्त रहने की वजह से इस मैदान में केन्द्रीय सभा आयोजित नहीं कर सके थे। लेकिन हमने राज्य के कई सौ गाँवों, शहरों में सभाएं की थी। यहाँ हमने 24 अप्रैल 2010 को सभा की थी। उस समय की और आज की परिस्थिति बिल्कुल भिन्न है। उस समय इस मैदान में जब हमने सभा की थी तब पश्चिम बंग में 34 सालों से सीपीएम सरकार का एकछत्र शासन चल रहा था। उसके खिलाफ पश्चिम बंग के लोग उस समय विक्षोभ से फट पड़े थे। वयोवृद्ध जानते हैं कि 1977 में जब से सीपीएम सरकार में आई थी इस राज्य में सिर्फ हमारी पार्टी ही विरोध की आवाज बुलन्द करती थी। उस समय केन्द्र की कांग्रेस व राज्य की सीपीएम के बीच सांठगांठ चल रही थी। हमने कहा था, सीपीएम वामपंथ को पैरों तले रौंदते हुए पश्चिम बंगाल में जन आन्दोलन और मजदूर वर्ग के संघर्षों के क्षेत्र में एक भयंकर विपदाजनक शक्ति के रूप में काम करती जा रही है।

अविभाजित भारतवर्ष में पश्चिम बंगाल जन आन्दोलनों का पीठस्थान था, वामपंथी आन्दोलन का गढ़ था। यहाँ से ही इंकलाब, यहाँ से ही कांग्रेस का विकल्प वामपंथी नेतृत्व नेताजी सुभाषचन्द्र को केन्द्र करके सिर ऊँचा करके खड़ा हुआ था। यही वामपंथी परम्परा बाद में रूसी क्रान्ति, चीनी क्रान्ति के प्रभाव से भारतवर्ष में कम्युनिज़्म की लहर लाई थी–उसे आत्मसात करके ही अविभक्त सीपीआई पचास के दशक में सिर ऊँचा करके खड़ी हुई थी। सीपीआई और बाद में सीपीएम मार्क्सवादी पार्टी न रहने के बावजूद भी उनकी उस समय वामपंथी आन्दोलन में, जनआन्दोलन में एक भूमिका थी। हम भी उनके साथ क्रान्तिकारी लाइन लेकर संयुक्त आन्दोलन में थे। एक समय यही कोलकाता शहर, अविभाजित बंगाल, ब्रिटिश साम्राज्यवादियों के लिए आतंक की जगह थी। क्योंकि यहीं बार बार प्रतिवाद होता, लड़ाई होती जो पूरे भारतवर्ष में फैल जाती। कहा जाता 'ह्वॉट बंगाल थिंक्स टुडे, इण्डिया थिंक्स टुमारो' साहित्य में, संस्कृति में, ज्ञान में, विज्ञान में, देशभक्ति में, संघर्ष में सभी दिशाओं में ऐसा ही था। नेहरू ने कहा था, 'कोलकाता जुलूसों का शहर, दुस्वपनों की नगरी है।' टाटा, बिड़ला और अन्य उद्योगपतियों के लिए कोलकाता ऐसा ही था। कांग्रेस कोलकाता की इस संघर्ष की आग को बुझा नहीं पाई। 1977 से सीपीएम ने यह जिम्मेदारी ली और योग्यता के साथ उसका पालन भी किया। मार्क्सवाद का चोला धारण किए, वामपंथ का नारा देते हुए सोशल डैमोक्रेटिक पार्टी के रूप में सीपीएम ने इस राज्य में जनआन्दोलन और मजदूर वर्ग के संघर्ष को ध्वस्त किया है। लेनिन ने एक समय कहा था, जो मजदूर आन्दोलन में बुर्जुआ के एजेण्ट हैं–मार्क्सवाद की बात करते हैं, इंकलाब जिन्दाबाद बोल कर जनता को विभ्रांत करते हैं, मजदूर वर्ग को भ्रमित करते हैं, वे परम्परागत बुर्जुआ पार्टी से भी खतरनाक होते हैं। इनके खिलाफ संघर्ष किये बिना मजदूर वर्ग की क्रान्ति कभी सफल नहीं की जा सकती। सत्ता में आकर सीपीएम ने इस भूमिका और भी नग्न रूप से निभाई थी और टाटा-बिड़लाओं का विश्वास भी हासिल किया था। कोई आन्दोलन नहीं होने देते थे, कोई भी प्रतिवाद नही होने देते थे, संघर्ष नहीं करने देते थे। महंगाई के खिलाफ, भाड़ा वृद्धि के खिलाफ, प्राथमिक स्तर से अंग्रेजी और पास-फेल हटा देने के खिलाफ मजदूरों की माँगों, किसानों की माँगों को लेकर हमारे कार्यकर्ताओं ने इस कोलकाता की सड़कों पर, पश्चिम बंग के गाँव-शहरों में अपना खून बहाया है। हमारे 157 नेता-कार्यकर्ताओं का उन्होंने कत्ल किया है। किसी और पार्टी के नेता-कार्यकर्ता को उस समय जान नहीं देना पड़ी। सीपीएम के समय सरकार के खिलाफ आन्दोलन करने के अपराध में आज भी हमारे 56 नेता-कार्यकर्ता आजीवन कारावास की सजा भुगत रहे हैं, 1100 कार्यकर्ताओं के खिलाफ झूठे मुकदमें चल रहे हैं। सीपीएम ने पूरे राज्य में फासीवादी तरीके का ऐसा एक परिवेश पैदा कर दिया था। कहीं भी खुल्लमखुल्ला बात नहीं की जा सकती थी। यहाँ तक कि गली-मोहल्लों, घर तक में भी लोग बात नहीं कर पाते थे, भयभीत रहते थे। विरोधी बात कहने से ही अत्याचार, धमकी, मोहल्ले में रहने नहीं देंगे, इलाके में बसने नही देंगे, ग्रामीण क्षेत्र में खेती बन्द करा देते, बॉयकॉट कर देते। जमीन-घर खरीदना-बेचना, लड़के-लड़कियों का स्कूल-कॉलेज में दाखिला होना न होना, यहाँ तक कि घर में किसी की शादी के मामले को भी वे कंट्रोल करते थे। ग्रामीण क्षेत्रों में पंचायत, पुलिस, असमाजिक तत्व, प्रोमोटर, कांट्रेक्टर मिल कर एक दुष्चक्र, शहरों में इंडस्ट्रियल हाऊस, कारपोरेट सैक्टर, बिग-बिजनैस, पुलिस, प्रशासन, सीपीएम के समाजविरोधी तत्वों का एक दुष्चक्र सभी कुछ कंट्रोल करता था। स्कूल के एक चपरासी से लेकर, युनिवर्सिटी के वाइस-चांसलर, प्रोफेसर, टीचर तक सीपीएम के साथ जुड़े बिना कोई काम नहीं पा सकते थे। सरकारी दफ्तर में ट्रान्सफर, प्रोमोशन, सब कुछ सीपीएम के हैड क्वार्टर अलिमुद्दीन स्ट्रीट में तय होता था। इस तरह की एक दमघोंटू परिस्थिति पूरे पश्चिम बंग में पैदा हो गई थी। उसके खिलाफ हमें संघर्ष करना पड़ा था। पश्चिम बंग में विदेशी पूँजी को आने का न्योता दिया जाता और सीपीएम हैड क्वाटर अलीमुद्दीन स्ट्रीट में

(शेष पृष्ठ 2 पर)

ईरान से कच्चा तेल के आयात में कटौती के फैसले की एसयूसीआई(सी) द्वारा कड़ी निन्दा

एसयूसीआई(सी) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने 16 मई को जारी एक बयान में कहा:

ईरान से इसके कच्चे तेल के आयात में 11 प्रतिशत कटौती करने के कांग्रेस-नीत यूपीए सरकार के फैसले की हम कड़ी भर्त्सना करते है। यह अमेरिकी साम्राज्यवादियों के दबाव के आगे एकदम घुटने टेक देने के सिवाए और कुछ नहीं है जो उनके फरमानों के आगे झुकने के ईरान पर धौस जमाने के हर सम्भव हथकण्डे इस्तेमाल कर रहे हैं। हम इस फैसले को तुरन्त वापस लेने की माँग करते हैं और पेण्टागन कुकूमत के साथ साँठगाँठ कर एक क्षेत्रीय महाशक्ति बनने की महत्वाकांक्षा पाले हुए शासक भारतीय एकाधिकारी पूँजपतियों के वर्ग स्वाथें में अमेरीकी साम्राज्यवादियों की ओर बढ़ते झुकाव के बुरे अंजामों से भी सरकार को आगाह करते हैं। मानवता के आज घोर दुश्मन, अमेरिकी साम्राज्यवाद की कृपादृष्टि पाने के लिए सरकार की इस बदनीयत के खिलाफ भारत की जनता यकीनन उठ खड़ी होगी।

कॉ. प्रभाष घोष का भाषण...

(पृष्ठ 1 का शेष)

रायटर्स बिल्डिंग में अनेक अमेरिकन चैम्बर्स ऑफ कामर्स, ब्रिटिश चैम्बर्स ऑफ कामर्स, जर्मनी, जापान की कम्पनियों के प्रतिनिधि हाजिर होते थे और इस तरफ अम्बानी, टाटा आदि सीपीएम को दोनों हाथ उठाकर आशीर्वाद देते थे। क्योंकि इस वामपंथ को लेकर उन्हें कोई डर नहीं है। इस मार्क्सवाद को लेकर उन्हें कोई डर नहीं है। बल्कि वे उनके उपकारी बन्धु है। इसी तरह सीपीएम खड़ी थी। एक समय मार खाते-खाते हमने ही प्रतिवाद किया था। लोग शुरूआत में दोनों तरफ खड़े होकर देखते थे, डर की वजह से सड़कों पर नहीं उतरते थे, मन ही मन में समर्थन करते थे। इसके बाद धीर-धीरे सड़कों पर उतरना शुरू किया। 18 सालों तक सीपीएम की मार खाते-खाते हमारे कार्यकर्ता प्राथमिक स्तर से अंग्रेजी पुनः चालू करने की मांग पर और पास-फेल प्रणाली हटा देने के प्रतिवाद में पश्चिम बंग के लोगों के विवेक को जगा सके थे। इस राज्य के बुद्धिजीवियों के दर-दर पर हम गए थे। डॉ. सुकुमार सेन, प्रेमेन्द्र मित्र, प्रमथ विशी, डॉ. प्रतुल गुप्त, डॉ सुशील मुखर्जी सरीखे सब बुद्धिजीवियों, साहित्यिकों, शिक्षाविदों के पास अपील करने हम गए थे—आप आइए, इतना बड़ा सर्वनाश हो रहा है। वे भी सड़कों पर उतरे थे, विशाल आन्दोलन उठ खड़ा हुआ था। इस राज्य में सीपीएम सरकार के खिलाफ पहला बंध 1990 में हमारी पार्टी के आह्वान पर हुआ था। हमारे अकेले-अकेले आह्वान पर अब तक 15 बार सफल बांग्ला बंध हो चुके हैं। यह सब इतिहास है। इस प्रकार पश्चिम बंग में सीपीएम सरकार की जनविरोधी नीतियों और कार्यकलापों के खिलाफ हमारी पार्टी कॉमरेड शिवदास घोष की चिन्तनधारा की रोशनी में एक जनआन्दोलन का परिवेश पैदा कर पायी। इसने एक तरफ देशी-विदेशी पूँजी और दूसरी तरफ सीपीएम-कांग्रेस-भाजपा सभी को ही आतंकित कर दिया था। फिर से आम आदमी को प्रतिवाद के लिए मुखरित होने की प्रेरणा मिली थी। इसी को आधार बना कर आखिरकार सिंगूर-नन्दीग्राम का ऐतिहासिक संघर्ष हुआ, जिसको लेकर पश्चिम बंग व देश भर में जोरदार आन्दोलन का ज्वार पैदा हुआ था। उससे यह मांग उठी थी—सीपीएम को हटाओ, सीपीएम सरकार को हटाओ।

तृणमूल शासन के बारे में हम कभी आशावादी नहीं थे

इसी पृष्ठभूमि में 24 अप्रैल, 2010 को हमने इसी मैदान में सभा की थी। अब 2012 है। आज सीपीएम के बदले तृणमूल कांग्रेस की सरकार सत्तासीन है। पश्चिम बंग के लोगों ने सोचा था, विश्वास किया था, आशा की थी कि काफी परिवर्तन होगा, काफी कुछ होगा। लेकिन आज वे थ्नराश-हताश हैं। सवाल उठ रहा है कहीं कोई परिवर्तन तो नहीं देख रहे हैं। क्या यही चाहा था? इस प्रसंग में आपको याद दिला देना चाहता हूँ कि हमने सीपीएम को परास्त करने के लिए तृणमूल कांग्रेस का समर्थन किया था यह बात ठीक है, किन्तु साथ ही साथ हमने कहा था कि तृणमूल सरकार आने से भी जो लोग चाह रहे हैं वह परिवर्तन नहीं आएगा। वह परिवर्तन आ नहीं सकता है। हमने कहा था कि देशी-विदेशी पूँजी के स्वार्थ में जिस तरह केन्द्र में कांग्रेस काम कर रही है, बीजेपी काम कर रही है, सीपीएम काम रही है, अन्यान्य राज्य सरकारें काम कर रही हैं, विभिन्न राज्यों की क्षेत्रीय बुर्जुआ सरकारें काम कर रही हैं, उसी प्रकार तृणमूल कांग्रेस भी क्षेत्रीय पूँजी के स्वार्थ में राष्ट्रीय बुर्जुआ के साथ हाथ मिला कर निर्मित हुई है। यह भी एक बुर्जुआ पार्टी है। परिणामतः कांग्रेस ने शासन में रह कर, सीपीएम ने शासन में रह कर बुर्जआ वर्ग के स्वार्थ में जिस तरह काम किया है, तृणमूल कांग्रेस भी उसी तरह काम करेगी, यह बात हमने उसी समय कह दी थी। हमने कहा था, यद्यपि तृणमूल बड़े आश्वासन दे रही है, कह रही है कि बहुत कुछ करेगी पर हमे विश्वास नहीं है कि यह होगा। कहा था, *'सोनार बांग्ला होबे ना'*, कोई बुनियादी परिवर्तन नहीं होगा। हमने कहा था सरकार परिवर्तन और शोषणमूलक व्यवस्था का परिवर्तन एक नहीं है। जनजीवन की मौलिक समस्याओं का समाधान करने के लिए पूँजीवादी व्यवस्था का परिवर्तन होना चाहिए, पूँजीवादी राजसत्ता का परिवर्तन होना चाहिए। वोटों के द्वारा, सरकार परिवर्तन के द्वारा यह संभव नहीं है। हमने तृणमूल के बारे में कहा था कि सरकार में बैठ कर यदि वे इमानदारी के साथ प्रयास करें तो बहुत हुआ तो वे पुलिस के अन्दर कुछ निष्पक्षता ला सकते हैं, बहुत हुआ तो राशनिंग में व्याप्त भ्रष्टाचार को बन्द कर सकते हैं, सरकारी दफ्तरों में कुछ घूसखोरी बन्द कर सकते हैं। हमने कहा था कि सीपीएम सरकार के शासन में जिस तरह निर्दयी हो कर पुलिस ने आन्दोलन का दमन किया था यदि वे ईमानदारी से चाहें तो इसको कुछ हद तक बन्द कर सकते हैं। साथ ही साथ हमने कहा था कि यहाँ 'ईमानदारी' और 'यदि' काम कर रहा है। अर्थात् यह होगा ही ऐसा भरोसा हमने व्यक्त नहीं किया था। कहा था, कुछ होगा इस बारे में हम आशावादी नहीं हैं।

आज पश्चिम बंग में केवल 11 महीने से तृणमूल सरकार है। अभी से ही गली-मोहल्लों में चर्चा, घर घर में चर्चा है—यह क्या वही परिवर्तन है जो हमने चाहा था। एक के बाद एक काण्ड हो रहे हैं। फसल के न्यायसंगत दाम न मिलने से कर्ज के बोझ से दबे कितने ही किसानों ने आत्महत्या कर ली हैं। जिस तरह सीपीएम के शासनकाल में होता था, हस्पतालों की दुर्दशा के चलते उसी तरह बच्चों की मौतें हो रही हैं, उसी तरह से महिलाओं पर बलात्कार की घटनाएं निरन्तर हो रही हैं। स्कूल-कॉलेजों में सीपीएम के समय जिस तरह विरोधी सिर ऊँचा नहीं कर सकते थे, चुनाव में खड़े नहीं हो सकते थे, अब भी वही बात हो रही है और छात्रों पर हमले, अध्यापकों पर हमले हो रहे हैं। उसी तरह स्कूल कमेटी, कॉलेज कमेटी को पार्टी नेतृत्व द्वारा कंट्रोल किया जा रहा है। उसी प्रकार पुलिस पर पार्टी का कन्ट्रोल कायम किया जा रहा है। सिन्डीकेट का जुल्म, हफ्ता वसूली, असामाजिक तत्वों की धमकी, काला बाजारी, महिला तस्करी, बलात्कार, स्मगलिंग, अपहरण, महंगाई, भ्रष्टाचार ये सब कुछ जारी है, हाल ही में कार्टून को लेकर अध्यापक को गिरफ्तार करने की घटना घटी है। आलोचना की है, कह कर संवाद माध्यमों पर फतवा जा रही हो रहा है, पंचायतों में भ्रष्टाचार वैसे ही व्याप्त है जैसे सीपीएम के राज में था। कहीं पर कोई परिवर्तन नहीं। स्वाभाविक रूप से सवाल उठता है कि हमने क्या तो चाहा था और क्या मिला? यदि यह जानने के बाद भी कि यह सब हो सकता है फिर हमने पिछले चुनाव में सीपीएम को हराने के लिए तृणमूल को वोट देने के लिए क्यों कहा था? तत्कालीन राजनीतिक परिस्थिति के अनुसार ही वह आह्वान हमने किया था।

एस.यू.सी.आई.(कम्युनिस्ट) और तृणमूल कांग्रेस की एकजुटता की पृष्ठभूमि

आप जानते हैं 1977 से सीपीएम के खिलाफ बहुत आन्दोलन हमने किए हैं, कांग्रेस के खिलाफ, सीमीएम के खिलाफ चुनावों में भी हम लड़े हैं। लेकिन सीपीएम को सत्ता से हटाने का आह्वान हमने इससे पहले नहीं किया था। सीपीएम मस्ट गो, सीपीएम सरकार को हराना होगा— हमने सिंगूर-नन्दीग्राम में सीपीएम के फासीवादी आक्रमण के बाद दिया था। हमारे साथ तृणमूल की एकता पहली बार सिंगूर-नन्दीग्राम में संघर्ष की जरूरत से कायम हुई थी। वहाँ यह आन्दोलन पहले हमने ही संगठित किया था। वहाँ के लोग यह बात जानते हैं, बाहर के जो लोग खबर रखते हैं वे भी जानते हैं। पत्रकार जानते हैं। लेकिन इतने दिन किसी ने यह बात नहीं लिखी। संवाद माध्यमों में हमारी पार्टी की खबरें नहीं दी जाएंगी यह राज्य के वासी जानते हैं। गत 14 मार्च को दिल्ली में साढ़े तीन करोड़ लोगों के हस्ताक्षरयुक्त मांगपत्र लेकर लाख से अधिक लोगों ने संसद अभियान किया था लेकिन इस राज्य के एक समाचार पत्र में कुछ लाइनों को छोड़कर और किसी ने कोई खबर नहीं दी। हाल ही में वर्तमान पत्रिका के एक विशिष्ठ पत्रकार ने इसका उल्लेख किया है कि सिंगूर-नन्दीग्राम में हमने ही आन्दोलन की पहल की थी। हमने जब शुरू किया था तब स्थानीय तृणमूल नेता-कार्यकर्ता हमारे साथ आन्दोलन में सहयोग करना चाह रहे थे हमने उस समय सोचा हमारी अकेली शक्ति से सीपीएम के इस आक्रमण का मुकाबला नहीं किया जा सकता। तृणमूल के पक्ष में ज्यादा लोग हैं। इस जनता को आन्दोलन में शामिल करा लेने से आन्दोलन और भी ताकतवर होगा। तृणमूल के बारे में लोगों के अन्दर यही धारणा पैदा हुई कि बड़ी पार्टी है अखबार में, टीवी में व्यापक प्रचार होगा। हम यदि अकेले अकेले आन्दोलन करें, उससे सिंगूर-नन्दीग्राम में सीपीएम की पुलिस यदि खून की नदी भी बहा दे तब भी संवाद माध्यम एक लाइन भी प्रचारित नहीं करेंगे। लेकिन तृणमूल तो उनके घर के आदमी हैं, तृणमूल रहने से मीडिया आएगा, प्रचार होगा। तृणमूल आन्दोलन में छतरी की तरह काम करेगी। इसी वजह से सिंगूर-नन्दीग्राम में आन्दोलन की रक्षा करने और शक्तिशाली करने के लिए ही हमने तृणमूल के साथ एकता कायम की थी। राज्य में तब देशी-विदेशी पूँजी के स्वार्थ रक्षक के रूप में जनता की प्रधान शत्रु सीपीएम थी, उसी तरह से केन्द्र में प्रधान शत्रु कांग्रेस थी और अब भी कांग्रेस है। इस अवस्था में राज्य में जो विरोधी शक्ति और क्रान्तिकारी आन्दोलन की गौण शत्रु थी उसको सत्ताधारी प्रधान शत्रु के खिलाफ काम में लगाओ—यह नीति हमने ग्रहण की थी। यह बात बहुत पहले लेनिन ने 'लेफ्ट विंग कम्युनिज़्म एन इन्फेन्टाइल डिस्आर्डर' लेख में कम्युनिस्टों से कही थी कि मूल शत्रु पर आघात करना हो तो गौण शत्रु की शक्ति को काम में लगाओ। वह शक्ति कितनी ही अस्थाई हो, ढुलमुल हो, बेभरोसे की और अविश्वसनीय हो उसको जहाँ तक हो इस्तेमाल करो। लेनिन, स्टालिन, माओ त्से-तुंग सभी ने यह नीति अपनायी थी। इसी दृष्टिकोण से संचालित होकर हमने उस समय तृणमूल के साथ एकजुटता की थी। इस पर भी हमने कहा था, पार्टी के बैनर तले नहीं, जनकमेटी का गठन करना होगा। वे भी पहले तो राजी नहीं हुए। क्योंकि राज्य में कहीं भी कोई भी जनकमेटी उन्होंने गठित नहीं की है। इससे पहले सीपीएम, सीपीआई जब कांग्रेस-विरोधी जन आन्दोलन में रहते थे, तब वे भी जनकमेटी गठन करने के लिए राजी नहीं होते थे। क्योंकि वोटबाज पार्टियाँ आन्दोलन में जनता की सचेत, सक्रिय, संयुक्त भूमिका से घबराती हैं। वे जनता को सिर्फ विक्षोभ के स्तर तक रखकर चुनावी फायदा बटोरना चाहती हैं। नन्दीग्राम-सिंगूर के लोग तो निश्चित ही जानते हैं, इस राज्य के अनेक लोग भी जानते हैं कि हमारी पार्टी नहीं रहने से सिंगूर-नन्दीग्राम में विशेष कुछ नहीं होता। क्योंकि तृणमूल जनआन्दोलन की पार्टी नहीं है। इतने दिन कुछ छिटपुट विक्षोभ, पदयात्रा, अनशन, धरने छोड़ कर कुछ नहीं किया। जनता की कोई मांग भी हासिल नहीं कर सकी। इसी वजह से ही सीपीएम हमारी पार्टी पर इतनी खफा हो गई है।

सिंगूर के मामले में हमारे साथ गहरा मतभेद हुआ था

खैर, इस बार हमारे दबाव के कारण 'सिंगूर कृषि जमी रक्षा कमेटी', और 'नन्दीग्राम भूमि उच्छेद प्रतिरोध कमेटी' गठित हुई। आन्दोलन के विभिन्न स्तरों पर हमारे साथ उनका तीव्र मतभेद हुआ था। आज सिंगूर में जो संकट दिखाई दे रहा है वह जरूरी नहीं था। सिंगूर में जब पुलिस जमीन दखल करने गई, तो हमने किसानों और महिलाओं को एकजुट करके जमीन दखल की कार्रवाई तीन दिन तक नहीं होने दी। पुलिस पीट रही थी तब भी किसान जमीन नहीं छोड़ रहे थे। उसी समय अचानक तृणमूल नेत्री धर्मतला में अनशन पर बैठ गई, अखबारों में जोरदार प्रचार हुआ। ऐसा एक परिवेश तैयार हुआ मानो अनशन से सब कुछ हो जाएगा। सिंगूर के तृणमूल नेताओं ने भी किसानों को यही समझाया—इस संघर्ष की जरूरत नहीं है, खामखा पुलिस की मार क्यों खाई जाए? अनशन के जरिए सब हो जाएगा। हमने उस समय खुल्लमखुल्ला हैण्डबिल छाप कर तृणमूल के इस कार्यक्रम की आलोचना की थी। यह नहीं होता तो सीपीएम और टाटा की हिम्मत नहीं थी कि जमीन को घेर कर दीवार खड़ी कर देते। अनशन के दौरान ही दीवार खड़ी कर दी गई थी। लेकिन हमारा ऐसा संगठन सिंगूर में नही था कि हम अकेले इस आन्दोलन की रक्षा कर सकते। यहाँ तक कि तृणमूल सरकार के सत्तासीन होने के बाद ही गत 5 अगस्त को रानी रासमणी रोड की सभा में मैने कहा था, तृणमूल सरकार में आई है, अब तो वह जमीन दखल कर सकती है, दीवार तोड़ दे सकती है। यह एक न्यायसंगत मांग है। उन्होंने ब्रिटिश शासन के अनेक पुराने कानूनों को

(शेष पृष्ठ 3 पर)

कॉ. प्रभाष घोष का भाषण...

(पृष्ठ 2 का शेष)

इस्तेमाल करके जबरदस्ती जमीन हड़प ली थी। यहाँ तो किसान जाकर न्यायसंगत अधिकार से ही जबरदस्ती खुद की जमीन दखल करके ले सकते हैं। पुलिस तो तृणमूल के हाथ में ही है। एक समय पश्चिम बंग में पूर्वी बंगाल से शरणार्थी आ कर जादवपुर, टालिगंज सहित बहुत जगह जमीन जबरदस्ती दखल करके बैठ गए थे। जमीन के स्वामित्व को लेकर जोरदार आन्दोलन हुआ था। जिसके फलस्वरूप विधान राय की सरकार ने इस जबरदखल को वैध कहकर स्वीकृति दी थी। उस समय तो उन उजड़े हुओं ने दूसरों की जमीन दखल की थी। और यहाँ सिंगूर में तो किसानों की खुद की जमीन ही लेने का सवाल है। नेता यह भी होने नहीं देंगे। क्योंकि सिर्फ टाटा ही नहीं पूरा कारपोरेट सैक्टर इससे नाराज हो जाएगा। आज घर घर में कोहराम मचा है। सवाल उठा है हमें क्या मिला? इसका जिम्मेदार तो तृणमूल नेतृत्व ही है। उनको वोट की जरूरत थी, वोट हो गई, अब सिंगूर को लेकर उन्हें और कोई सिरदर्द नहीं है। नन्दीग्राम में लेकिन वे ऐसा नहीं कर सके। नन्दीग्राम में हमारी शक्ति सापेक्षत: अधिक थी। नन्दीग्राम में तृणमूल नेतृत्व भी समझ सका कि हम जो रास्ता बता रहे हैं उस रास्ते पर चले बिना कुछ नहीं होगा। नन्दीग्राम में लोगों की सिर्फ कृषिभूमि ही नहीं, घर-द्वार सब जा रहा था। अत: वे दिलोजान से मरने मारने पर उतर आए थ। वे आखिर तक लड़े थे। लेकिन इस सिंगूर-नन्दीग्राम आन्दोलन का दमन करने के लिए जो भयावह नृशंस आक्रमण हुआ, वह इससे पहले इस देश में कभी नहीं हुआ। कांग्रेस शासन में भी 1959 में खाद्य आन्दोलन में और बाद में 1966 में गोलीबारी हुई थी, अनेक लोग मारे गए थे। नन्दीग्राम में सिर्फ गालीबारी से ही नहीं मारे गए, बल्कि सामूहिक बलात्कार करवाये थे इस सीपीएम सरकार ने, दो दो बार ऐसा हुआ। 14 मार्च को पुलिस और पुलिस की वर्दी पहने गुण्डावाहिनी ने गोलियों से लोगों को भूना था, नरसंहार किया था, सामूहिक बलात्कार गया किया था। पहली बार सीपीएम के मुख्यमंत्री ने उस तरह का नरसंहार, सामूहिक बलात्कार करवा कर कहा था, 'ईंट का जवाब पत्थर से मिलेगा।' गर्व के साथ एक मुख्यमन्त्री ने यह बात कही थी। जरा भी शर्म-लिहाज़ नहीं बची थी।

नन्दीग्राम में हुआ वीभत्स हमला भुलाया नहीं जा सकता

फिर नवम्बर में नन्दीग्राम को चारों तरफ से घेर लिया गया। किसी मीडिया तक को भी घुसने नहीं दिया गया। बाहरी दुनिया से सम्पर्क काट करके नन्दीग्राम में छाँट-छाँट कर असामाजिक तत्वों, अपराधी तत्वों और पुलिस को उतार दिया गया। उन्हें जो मिला गोली मार दी। माँ-बहनों से बलात्कार किया गया, लड़के के सामने माँ का रेप किया गया, कोई भी कसर नहीं छोड़ी और इस सबके बाद पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा था, अलीमुद्दीन के नेताओं ने कहा था कि नन्दीग्राम में 'सूर्योदय हुआ है'। सिंगूर में मुख्यमंत्री ने यह भी कहा था, 'टाटा का बाल भी बांका नहीं होने देंगे'। टाटा से उनका इतना अनुराग है। राज्य व देश के लोग इस वीभत्सता को भुला नहीं सकते। जनआन्दोलन में दमन की ऐसी नृशंसता अतीत में पहले कभी नहीं हुई। कांग्रेस, भाजपा, किसी भी पार्टी ने जनआन्दोलन के दमन के लिए इस तरह का भयंकर नरसंहार और सामूहिक बलात्कार की मुहीम नहीं चलायी थी। हमने समझ लिया कि इसके बाद भी सीपीएम के सत्ता में रहने से, जनआन्दोलन पर दमन-उत्पीड़न और भी बढ़ेगा, आक्रमण और भी बढ़ेगा। इतना कुछ होने के बाद भी सत्ता में आ गये तो वे और भी बेपरवाह हो जाएंगे। इसलिए सीपीएम को सजा मिलनी चाहिए और जन आन्दोलन के स्वार्थ में उसको सत्ता से बाहर करने की जरूरत है। उस समय पश्चिम बंग की समस्त जनता के सामने जन आन्दोलन के तकाजे के तौर पर यह आया कि सीपीएम मस्ट गो। तृणमूल कांग्रेस के साथ एकता कायम करने की बैठक से पहले फारवर्ड ब्लॉक, आरएसपी के दफ्तरों में हम गए। नक्सलवादियों को भी कहा था। फारवर्ड ब्लाक, आरएसपी के नेताओं ने कहा, आप लोगों के वक्तव्य के साथ हम सहमत हैं लेकिन हमारे हाथ-पाँव बंधे हुए हैं, हम मंत्रीत्व छोड़ नहीं सकते हैं। नक्सल भी राजी नहीं हुए। इस परिस्थिति में, आगामी दिनों में सीपीएम के सत्ता में बने रहने से जनआन्दोलन पर और भी भयंकर आक्रमण टूट पड़ेगा-इस कारण से और इसको रोकने के लिए हम तृणमूल के साथ वार्ता में बैठे थे। तीन मुख्य शर्तें उनके सामने रखी थीं-केन्द्र में कांग्रेस और राज्य में सीपीएम सरकार के खिलाफ लड़ना होगा, कांग्रेस व भाजपा से समान दूरी बनाये रखनी होगी और मार्क्सवाद व वामपंथ पर आक्रमण नहीं किया जाए। तृणमूल तुरन्त राजी हो गई। क्यों राजी हुई इसे हम अच्छी तरह जानते थे। तृणमूल को उस समय जरूरत थी हमारी पार्टी एस.यू.सी.आई.(कम्युनिस्ट) का साथ लेने की। यह बात ठीक है कि हम अकेले खड़े होकर बहुत वोट नहीं पाते हैं लेकिन राज्य में हमारी एक प्रतिष्ठा है, लोग हमें बहुत महत्व देते हैं, हमारा साथ पाने से वोट के मामले में उनका बहुत लाभ होगा। यह हम भी जानते हैं। इसके बावजूद भी जहाँ तक उन्हें प्रतिबद्ध कराया जा सके, जहाँ तक प्रतिबद्धता में अटका के रखा जा सके, इसके लिए हमने ये शर्तें रखी थीं। शर्त तोड़ेंगे तो पब्लिक देखेगी।

सीपीएम को लेकर पूँजीपतियों ने एक तीर से दो निशाने साधे हैं

इसके अलावा, एक दूसरे पहलू से भी हमारा उद्देश्य था। 34 वर्ष के शासनकाल में सीपीएम ने जितना पूँजीवाद के स्वार्थ में काम किया है, एक तरफ देशी-विदशी पूँजीपतियों ने जिस तरह उनकी तारीफ की है, दूसरी तरफ सीपीएम के खिलाफ क्षुब्ध लोगों को बुर्जुआ संवाद माध्यमों ने समझाया कि, ये जो सीपीएम को देख रहे हो, यही मार्क्सवाद है, यही वामपंथ है। ये जो सीपीएम नेताओं को देख रहे हो, मंत्रियों को देख रहे हो, स्टालिन और माओ त्से-तुंग इसी तरह के थे। एक ही साथ बुर्जुआ ने दो निशाने साधे थे-सीपीएम को लगा कर वामपंथी आन्दोलन, जनआन्दोलन और मजदूर वर्ग संघर्ष को ध्वस्त किया, दूसरी तरफ मार्क्सवाद व वामपंथ को कलुषित किया। यह भी बन्द होना जरूरी था। इसके अलावा, पूरे देश में सीपीएम ने इस तरह की एक मिथ्या धारणा पैदा कर दी थी कि 'पश्चिम बंगाल में 34 वर्ष हमने ऐसा काम किया है कि यह एकदम वामपंथ का गढ़ बन गया है।' दूसरी तरफ पश्चिम बंगाल में सीपीएम के इर्द-गिर्द वामपंथी सोच रखने वाला जो हिस्सा था उन लोगों को नेतागण वामपंथ के नाम पर सुविधावाद में डूबाकर प्रशासन के साथ मेल करा कर भ्रष्ट कर रहे थे, रसातल में ले जा रहे थे। वामपंथी आन्दोलन की शक्ति को नौकरी-चाकरी, सुयोग सुविधा, प्रोमोटरी, लाइसेंस, ठेकेदारी आदि में खींच कर अधोपतित कर रहे थे। यह बन्द कराने की भी जरूरत थी। जिस युवा शक्ति ने ब्रिटिश राज के दौरान बंगाल में ब्रिटिश शासन को कंपा दिया था, पचास के दशक में वामपंथी आन्दोलन का ज्वार पैदा करने में मदद की थी, उसी यौवन को सीपीएम ने वामपंथ का चोगा पहन कर शराब, जुए, सट्टे, गंदगी, अश्लीलता की ओर धकेल दिया था। इसको भी जहाँ तक संभव रोकने की जरूरत थी।

तृणमूल के चरित्र का भी पर्दाफाश होना भी जरूरी था

तृणमूल के चरित्र का भी पर्दाफाश होने की जरूरत थी। तृणमूल के बारे में संवाद माध्यमों में व्यापक प्रचार हुआ था कि तृणमूल सत्ता में आकर बहुत कुछ कर देगी, तृणमूल ही एकमात्र भरोसा है, सीपीएम के विकल्प के रूप में तृणमूल ही रास्ता दिखाएगी। राजनीति में असचेत जो आम आदमी हैं उनके अन्दर भ्रम पैदा करके इस तरह का मनोभाव पैदा कर दिया था। तृणमूल के विपक्ष में रहने से आसानी से यह भ्रान्त धारणा दूर नहीं हो रही थी। अत: हम चाहते थे कि वे लोग देखें कि तृणमूल सत्ता में आने पर क्या करती है। जिस तरह एक समय हमने चाहा था कि सीपीएम सत्ता में आए, लोग देखें कि किस तरह के वामपंथी, किस तरह के मार्क्सवादी हैं वे? आज लोग इसी तरह से तृणमूल को भी देख रहे हैं। इसकी भी जरूरत थी। एक और पहलू पर भी हमारी नजर थी कि सीपीएम के आचरण से जनसाधारण क्षुब्ध होकर चुनाव में सीपीएम-विरोधी स्टैण्ड ले रहे थे, वे कांग्रेसी विचार के लोग नहीं हैं, वे दक्षिणपंथी विचार के लोग नहीं हैं, वे आम आदमी हैं। इनके अन्दर वामपंथी सोच रखने वाले लोग थे। इन लोगों को हम तृणमूल के हाथों में नहीं छोड़ दे सकते थे। हमारे दबाव में अंतत: एक प्रतिबद्धता की तृणमूल को

आखिर तक रक्षा करनी पड़ी। चुनावों तक मार्क्सवाद व वामपंथ पर वे आक्रमण नहीं कर सके। हमने करने नहीं दिया। हमारे न रहने से तृणमूल एवं कांग्रेस के गठजोड़ का उद्धार करने के लिए पूरे चुनावों को मार्क्सवाद व वामपंथ के खिलाफ कुत्सा अभियान में परिणत कर दिया जाता और इससे जनता गुमराह हो जाती। हमने इसको रोक दिया। इन सब कारणों से ही चुनावों में हमने तृणमूल कांग्रेस का समर्थन किया था। फिर साथ ही साथ हमने कह दिया था कि विधानसभा के चुनावों तक हमारा समर्थन है, उसके बाद हम विपक्ष में बैठेंगे। मंत्री पद का ऑफर दिया था, हमने इनकार कर दिया। हमने कहा था, हम सड़क की पार्टी हैं, आन्दोलन की पार्टी हैं, हम आन्दोलन करेंगे। सीपीएम सरकार के खिलाफ जैसे आन्दोलन किया था, वैसे ही तृणमूल सरकार के खिलाफ भी हम आन्दोलन करेंगे। हमने चुनावों से पहले ही ये सब बातें कही थी। लोगों को कह रहे हैं लड़ना होगा, आन्दोलन करना होगा। हम झूठ का कारोबार नहीं करते हैं। हमारी राजनीति साफ-सुथरी है। जिस तरह विधानसभा चुनावों से पहले तृणमूल ने हमें सिर्फ दो सीटें दी थी। इण्डस्ट्रियल हाऊस, फिक्की, बिग बिजनैस-इन्होंने तृणमूल को समझाया एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) पार्टी की ताकत मत बढ़ने दो, यहाँ तक कि दो सीटें भी ताकि न मिलें यह देखना होगा। हमारी एक निरन्तर जीती हुई सीट जिसे अकेले खड़े हो कर हम जीतते थे, उस सीट पर भी हमें हरा दिया गया। ये तमाम षड़यन्त्र हमने जनता के सामने पूरा खोल कर रख दिया है।

तृणमूल सरकार के खिलाफ पहला विक्षोभ प्रदर्शन हमने ही किया था। आज तृणमूल सरकार को लेकर गली-मोहल्लों सभी जगह खिलाफ चर्चा हो रही है। लोग चाहते हैं प्रतिवाद, लोग चाहते हैं आन्दोलन। हम इसी आन्दोलन को गठित कर रहे हैं, गठित करते जाएंगे। पिछले साल राज्य सरकार ने घोषणा की कि आठवीं कक्षा तक पास-फेल नहीं रहेगा। यह केन्द्र का फैसला है। सीपीएम सरकार की भी यही नीति थी। लेकिन आखिर तक वे हमारे जनआन्दोलन के डर से यह कर नहीं पाए थे। इस राज्य में हम लम्बे अर्से से लाखों-लाख छात्र-छात्राओं को शामिल कराते हुए चौथी कक्षा की वजीफा परीक्षा चलाते जा रहे हैं। तृणमूल सरकार ने इस बार घोषणा की है कि आठवीं कक्षा तक पास-फेल नहीं रहेगा। हमारा छात्र संगठन सड़क पर उतरा, 8 सितम्बर को इसी कोलकाता में हजारों हजार छात्र-छत्राओं का जुलूस हुआ। तृणमूल सरकार सत्तासीन होने के बाद इस राज्य में उनके खिलाफ यह था पहला विक्षोभ जुलूस। हमने ही संगठित किया था। जिस तरह उसके खिलाफ निन्दा अभियान चलाया गया आप जानते हैं। क्योंकि भारी संख्या में छात्र आए थे इसलिए एक झूठा प्रचार चला दिया-स्कूल के छात्रों का अपहरण हो गया है। इसको लेकर आसमान सिर पर उठा लिया गया। फतवा जारी किया गया, स्कूल के छात्र जुलूसों में नहीं आ सकेंगे। हमने देखा पूरा स्वदेशी आन्दोलन तो छात्रों का आन्दोलन था। हमारे विक्षोभ को आधार बना कर तृणमूल कांग्रेस ने पहले बावेला मचाया कि स्कूल के छात्रों का राजनीति करना नहीं चलेगा। जनता लेकिन उनके कुप्रचार से भ्रमित नहीं हुई। इसके अलावा, हम मजदूरों को लेकर आन्दोलन कर रहे हैं, बिजली के दाम बढ़ाए तो उसको लेकर आन्दोलन कर रहे हैं। हस्पतालों में भी वही सीपीएम का फार्मूला -पब्लिक-प्राईवेट-पार्टनरशिप, निजीकरण के रास्ते पर ही यह सरकार चल रही है। इसके खिलाफ भी हम आन्दोलन कर रहे हैं। आन्दोलन हमारा चल रहा है।

(शेष पृष्ठ 4 पर)

कॉ. प्रभाष घोष का भाषण...

(पृष्ठ 3 का शेष)

सीपीएम और तृणमूल में तफर्का

हम जानते हैं तृणमूल भी जनआन्दोलन पर हमला करेगी, जनतांत्रिक अधिकारों का हनन करेगी, लेकिन चाह कर भी सीपीएम जितना नहीं कर पाएगी। सीपीएम जितनी धूर्तता, कपटता और चालाकी करने की क्षमता उनकी नहीं है। तृणमूल पार्टी भी उन्मुक्त, ढीलीढ़ाली, असंख्य गुटबाजियों से क्षतविक्षत है। हजार प्रयास करने पर भी यह सीपीएम जैसी अफसरशाह केन्द्रीकृत पार्टी के रूप में जनता का दम घोंटने और जन आन्दोलन का दमन करने की क्षमता नहीं रखती है। सीपीएम के प्रति क्षुब्ध होकर साधारण भले आम आदमी जो तृणमूल के साथ निचले स्तर पर जुटे थे आज वे उससे दूर हटते जा रहे हैं। उनकी जगह लेते जा रहे हैं सीपीएम के पैदा किए गए असामाजिक तत्व ही। इस परिस्थिति में सीपीएम दुबारा से सत्ता में वापस आने के लिए तैयार हो रही है। वे 'दिन फिरने का' इंतजार कर रहे हैं। पूँजीपति वर्ग भी चाहता है सीपीएम ताकतवर बनी रहे, जरूरत पड़ी तो इस्तेमाल करेंगे। सीपीएम में 'शुद्धिकरण' के नाम पर क्या नाटक चल रहा है यह तो आप देख ही रहे हैं। लेनिन ने कहा था, कोई पार्टी वास्तव में ही कम्युनिस्ट हैं कि नहीं, गम्भीर हैं कि नहीं, इसे तब समझा जा सकता है, जब देखा जाए कि वह पार्टी बिना लाग-लपेट के खुल्लमखुल्ला अपनी गलती स्वीकार कर रही है, किस अवस्था में गलती हुई उसको खोज रही है, गलती के कारणों का पता लगा रही है, खुल्लमखुल्ला भूल सुधार के उपाय खोज कर कार्रवाई कर रही है। इस शिक्षा का लेशमात्र भी उनके अन्दर नहीं, उल्टे कार्यकर्ताओं को समझा रही है, एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) ही तृणमूल को लाई, नहीं तो इस बार भी सीपीएम जीतती। हमारी पार्टी की इतनी बड़ी क्षमता है कि हमारी वजह से ही पूर्व मुख्यमंत्री सहित दिग्गज नेतागण तृणमूल के नौसिखिए उम्मीदवारों से मात खा गए। तृणमूल को सत्ता में लाने के कारनामे का शत प्रतिशत श्रेय सीपीएम के नेताओं को ही जाता है। उन्होंने ही जनता को क्लांत कर दिया था। हमने क्यों चुनावों में तृणमूल का समर्थन किया था इसकी चर्चा में पहले ही कर चुका हूँ।

राजनीति की इतनी दयनीय परिणति क्यों

आज आप तृणमूल कांग्रेस को देख रहे हैं, चुनावों से पहले जो कहा था अब उसके पूरी तरह विपरीत कर रही है। इससे पहले आपने सीपीएम को भी देखा था, चुनावों से पहले जो बोलती थी, बाद में उसके विपरीत करती थी। भारत के सभी राज्यों में यही हो रहा है। केन्द्र में कांग्रेस कहिए, विभिन्न राज्यों में भाजपा या अन्यान्य पार्टियों की सरकारें कहिए, हर एक पार्टी को देखेंगे, चुनावों से पहले अनेक वायदों की झड़ी लगा देंगी और चुनावों के बाद ही पूरी तरह मुँह फेर लेती हैं। राजनीति का ऐसा ट्रेजिक हाल क्यों हुआ? हमारे देश में आजादी आन्दोलन में, यूरोप में संसदीय जनतन्त्र के स्थापनाकाल में, फ्रांसिसी क्रान्ति के युग में, जनतन्त्र की स्थापना के युग में राजनीति श्रद्धा की, गौरव की, मर्यादा की बात थी। उस समय राजनेताओं के बारे में कहा जाता था कि वे देश का काम कर रहे हैं, महत्वपूर्ण काम कर रहे हैं। राजनीति करने का मायने था देश की सेवा करना, देश के लिए संघर्ष करना। यह थी मानव जीवन की श्रेष्ठ साधना। स्वदेशी मायने ही था ईमानदार, त्यागी, निष्ठावान, संग्रामी। सिर्फ क्रान्तिकारियों के ही नहीं, समझौतावाादी गाँधीवादियों के बारे में भी यही बात कही जाती थी। लेकिन आज राजनीति का ऐसा हाल क्यो? राजनैतिक नेता झूठ बोलते हैं, लोगों को धोखा देते हैं, घोटाले करते हैं, छल करते हैं, चालाकी करते हैं और घोर भ्रष्टाचारी हैं। एक भी सरकार नहीं है जो भ्रष्टाचार से ग्रस्त न हो। हर रोज अखबार खोलने से ही देखा जाता है कि किसने कितने करोड़ का घोटाला किया है। कांग्रेस, भाजपा, सीपीएम कहिए सभी समान हैं, तृणमूल कांग्रेस पर भी यही आरोप लग रहा है। हो सकता है कोई एक विशेष मंत्री न कर रहा हो, लेकिन वे क्या जानते नहीं हैं कि उनके मंत्रिमण्डल में बाकी सब क्या कर रहे हैं। उनकी पार्टी के लोग क्या कर रहे हैं? सभी दोनों हाथों से रुपया लूटने की होड़ में लगे हुए हैं।

राजनीति का यह हाल ऐसे ही नहीं हो गया है। राजनीति की यह परिणति हुई चरम प्रतिक्रियाशील पूँजीवाद की सेवा करने के फलस्वरूप। यहाँ कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षा की याद दिला देना चाहता हूँ। उन्होंने कहा था, पार्टी, राजनीति इनका भी वर्ग चरित्र है। समाज वर्ग-विभाजित है, एक तरफ शोषक और दूसरी तरफ शोषित, एक तरफ पूँजीपति वर्ग और दूसरी तरफ मजदूर वर्ग–इसी प्रकार समाज बंटा हुआ है। अत: चाहे झण्डा तिरंगा हो, भगवा हो या सीपीएम के हाथों में लाल झण्डा ही हो वे बुर्जुआ राजनीति के धारक-वाहक हैं। इस राजनीति में मन्त्रीत्व है, गद्दी है, पैसा हड़पना है, भ्रष्टाचार है लेकिन नीति-आदर्श-नैतिकता नहीं है। पूरी दुनिया में आज यही हो रहा है। अमेरिका में अब्राहम लिन्कन नहीं मिलेगा। फ्रांस में रूसो, वाल्टेयर नहीं मिलेगा। इंग्लैण्ड में लॉक, बार्क, मिल नहीं मिलेगा। हमारे देश में भी स्वेदशी आन्दोलन के नेताओं जैसे नहीं मिलेंगे। पूँजीवाद जब हमारे देश में साम्राज्यवाद के खिलाफ लड़ रहा था, यूरोप में जब पूँजीवाद प्रजातन्त्र के लिए सामंतवाद के खिलाफ लड़ रहा था, बुर्जुआ जनवादी क्रान्ति तब संग्रामी क्रान्तिकारी लड़ाई लड़ रही थी। तब राष्ट्रीयतावादी आदर्श, मानवतावादी आदर्श भी संग्रामी व क्रान्तिकारी था। इस आदर्श की बात का उच्चारण करने से जेल जाना पड़ता था, मार खानी पड़ती थी। तब वह आदर्श मनुष्यत्व देता था, चरित्र देता था। आज पूँजीवाद सत्ता पर कायम है, राष्ट्रीय पूँजी ही आज देश का शोषण कर रही है, एकाधिकारी पूँजी को जन्म दे दिया है, मल्टीनेशनल को जन्म दे दिया है, हमारा देश साम्राज्यवादी हो गया है। यूरोप-अमेरिका तो पहले ही हो गए थे। अत: पूँजीवाद के स्वार्थ की जो सेवा करेंगे, इस पूँजीवाद के पैसे से जो राजनीति करेंगे, पूँजीवाद की जो गुलामी करेंगे वे भ्रष्ट और अध:पतित होने लाजिमी हैं। ये पार्टियों तो पूँजीवाद के पॉलिटिकल मैनेजर, जैसे रजिस्टर्ड कॉन्ट्रेक्टर रहते हैं, किसको कॉन्ट्रेक्ट मिलेगा इसके लिए कम्पटीशन चलता है। कांग्रेस कहिए, भाजपा कहिए, एसपी कहिए, एआईएडीएमके, सीपीएम, तृणमूल कहिए, सभी हैं पूँजीपतियों के पोलिटिकल मैनेजर। इण्डस्ट्रियल हाऊस का बिजनैस मैनेजर होता है, इण्डस्ट्रियल मैनेजर होता है उसी तरह से ये हैं उनके ही स्वार्थ में सरकार चलाने के पोलिटिकल मैनेजर।

गुना (म.प्र.) : एस.यू.सी.आई.(कम्युनिस्ट) के स्थापना दिवस के अवसर पर 29 अप्रैल को गुना (मध्यप्रदेश) की आजाद कालोनी के मैदान में एक खुली सभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में पार्टी के दिल्ली राज्य सचिव कॉमरेड प्रताप सामल मुख्यवक्ता रहे। इस सभा में मध्यप्रदेश के ग्वालियर, शिवपुरी आदि जिलों से पार्टी कार्यकर्ता व लोग शामिल हुये।

क्यों बार बार जनता ठगी जा रही है

चुनाव का मायने क्या है? यह क्या बाई दि पिपुल, फॉर दि पिपुल, ऑफ दि पिपुल अब और रह गया है। यह अमेरिका के प्रारंभिक काल में था, यूरोप के शुरूआती दौर में था। आज पिपुल कहाँ हैं? असल में, बाई दि मोनोपोलिस्ट, फॉर दि मोनोपोलिस्ट, ऑफ दि मोनोपोलिस्ट है। चुनाव का मायने है मनी पावर अर्थात् पैसे का खेल। चुनाव का मायने है प्रशासनिक पॉवर, ब्यूरोक्रेटिक पावर, पुलिस तन्त्र को काम में लगाना। चुनाव का मायने है असामाजिक तत्वों को काम में लगाना, चुनाव का मायने है बुर्जुआ मीडिया को इस्तेमाल करना, यही सब तय करना कि चुनाव में कौन पार्टी जीतेगी, कौन पार्टी मुख्य विपक्षी पार्टी के रूप में रहेगी। क्या जनतन्त्र नाम का कुछ है? कहीं भी लोगों के लिए जनतन्त्र नहीं है। भाषण में है, लेख में है। लेकिन पूँजीपतियों की अबाध लूट के लिए जनतन्त्र है। क्यों ऐसा हाल हुआ? कॉमरेड घोष ने दुख के साथ बार बार कहा था, इस देश के लोगों ने थोड़ी लड़ाइयाँ नहीं लड़ी हैं, कम जान नहीं दी है लेकिन फिर भी मुक्ति नहीं मिली। स्वदेशी आन्दोलन की बात कहिए, यहाँ खुदीराम से शुरू कर सैकड़ों शहीदों ने अपनी जान दी थी। ये क्या टाटा के घर के लड़के थे, अम्बानी के परिवार के लड़के थे, जिन्दलों के घर के लड़के थे? ये मध्यम वर्ग गरीब घरों के लड़के थे। ये चट्टग्राम की प्रीतिलता किस घर की संतान थीं? प्रीतिलता की मुत्यु के बाद उसकी माँ को घर घर में दाइगिरी करनी पड़ी थी, इतने गरीब घर की लड़की थी। साधारण मध्यम वर्ग घर के लड़के भगतसिंह के सपनों की क्या परिणति हो गई आज? क्यों आजादी का सारा फल पूँजीपति वर्ग ने हड़प लिया। क्योंकि उस समय इस देश के लोग संवाद माध्यमों द्वारा गुमराह हो गए थे। ब्रिटिश पूँजी से नियन्त्रित अखबार, देशीय पूँजी से नियन्त्रित अखबारों ने समझौतावादी दक्षिणपंथी नेतृत्व को समर्थन दिया था, गाँधीजी को समर्थन दिया था। गाँधीजी में था सशस्त्र क्रान्ति का भय, रूसी क्रान्ति हो जाने के बाद भारत के पूँजीपति सशस्त्र क्रान्ति नहीं चाहते थे। गाँधीजी के सशस्त्र क्रान्ति के विरोध की यही वजह थी। भारत के पूँजीपतियों ने चाहा था अंग्रेज जाएं, उनके बदले वे सत्ता में आ जाएं। मालिक मुनाफा कमाएगा, मजदूर श्रम देगा यही सम्बन्ध रहे, गाँधीजी के अन्दर मानवता के नाम पर यही काम करता रहा। परिणामत: खुदीराम को गाँधीजी मान नहीं पाए। शरतचन्द्र ने कहा था, गाधीजी को धन्नासेठों और व्यापारियों ने घेर रखा है, वे क्रान्ति से, समाजवाद से डरते हैं। सुभाष बोस ने कहा था, करोड़पति उद्योगपति, व्यापारी, जमींदार-जोतदार अब देश के सेवक का बाणा धारण कर रहे हैं, क्योंकि अब वे गाँधीवादी हो गये हैं। यही सुभाष बोस क्रान्तिकारिता के प्रतीक थे। इन्हीं सुभाष बोस को उस समय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष पद से षडयन्त्र रच करके इस्तीफा देने को बाध्य किया गया था, कांग्रेस से बहिष्कृत किया गया था। ये सब इतिहास है। उस समय देश के लोग गांधीजी को अवतार मानते थे। सुभाषचन्द्र के साथ गाँधीजी का तफर्का कहाँ है यह कितने लोग जानते थे? कितने लोग जानते थे कि गांधीजी नहीं चाहते हैं कि भगतसिंह की फांसी रद्द की जाए? कितने लोग जानते थे कि गांधीजी ने कहा था, यदि सशस्त्र क्रान्ति के जरिए भारत में आजादी आती है तो आजादी मैं नहीं चाहता हूँ। उस समय आम आदमी सोचता था हम अदरक के व्यापारी हैं हम जहाज की खबर का क्या करेंगे, इतनी सच्चाई नहीं समझते हैं, नेता जो चाहे तय कर दें। इसीलिए उस समय क्रान्तिकारिता सामने नहीं आ सकी। सुभाष बोस सामने नहीं आ सके। गाँधीवादियों ने ही कांग्रेस के नेतृत्व में बने रहकर अंग्रेजों के साथ समझौता करके भारत में जो शासन कायम किया था, अब वही चल रहा है। उसकी परिणति हम देख रहे हैं। इसके बाद इस राज्य में कांग्रेस का विकल्प कौन है? सीपीएम् उसके पक्ष में सवाल उठे, व्यापक प्रचार हुआ संवाद माध्यमों में, अंधे की तरह सीपीएम का लोगों ने समर्थन किया। फिर सीपीएम का विकल्प कौन? अंधे की तरह तृणमूल का समर्थन किया गया। क्योंकि अखबारों का प्रचार, टी.वी. रेडिया का प्रचार

(शेष पृष्ठ 5 पर)

कॉ. प्रभाष घोष का भाषण...

(पृष्ठ 4 का शेष)

उसी तरफ था। तृणमूल का समर्थन करते हुए भी हमने जो चेतावनी दी थी उसका संवाद माध्यमों ने कोई प्रचार नहीं किया। इसीलिए आपको कहूँगा अभी भी समय है। इस कड़वी सच्चाई से सबक लें। राजनीति समझिए, पार्टी के वर्ग चरित्र को समझिए, किसी पार्टी के नारों, झूठे आश्वासनों के झांसे में न आएं। झण्डे का रंग देखकर, प्रचार माध्यमों में प्रचार देख कर भ्रमित न हों। खद्दर पहन लेने से ही स्वदेशी नहीं हो जाता है, भगवा पहनने से ही सन्यासी नहीं हो जाता है, मक्का जाने से ही हाजी नहीं हो जाता है। एक समय इस देश के ही लोगों ने बहुत दुख के साथ ये बातें कही थी। इसलिए भीड़ देखकर ही पीछे मत दौड़ने लगिए क्योंकि तब तो बार-बार ठगे जाऐंगे। हम भी तो ठग सकते हैं। आज इतनी बातें बोल रहे हैं, हम भी तो खुद की नीति को छोड़ दे सकते हैं। अभी नहीं छोड़ी है?, यदि आप लोग सजग नही रहेंगे तो आने वाले दिनों में छोड़ भी दे सकते हैं। अत: हाय हाय करने से क्या लाभ? इससे शिक्षा लेनी होगी। राजनीति को लेकर सर खपाइए, आँख, कान खुले रखिए, नहीं तो बार बार ठगे जाओगे।

पूँजीवाद मनुष्यत्व को, विवेक को मार रहा है

मैं एक और विषय में बोलना चाहता हूँ। बुर्जुआ बुद्धिजीवियों व अर्थशास्त्रियों का एक ग्रुप दावा कर रहा है कि समाजवादी अर्थव्यवस्था फेल हो गई। पूँजीवादी बाजार अर्थव्यवस्था ही एकमात्र रास्ता है। वे क्या असलियत की ओर देख रहे हैं? आज दुनिया में बुर्जुआ बाजार अर्थ-व्यवस्था का हाल क्या है? जिस अमेरिका को कहा जाता था विश्व की पूँजीवादी अर्थव्यवस्था का लोकोमोटिव या ईन्जन, आज वह अर्थव्यवस्था प्रशांत महासागर में गोते खा रही है। जिस अमेरिका ने दूसरे महायुद्ध में पूरी दुनिया को कर्ज के जाल में जकड़ लिया था, आज वही अमेरिका सबसे ज्यादा कर्जवान देश है। इस तरह की दुर्दशा हो गई थी कि पिछले साल तक 14 लाख 30 हजार करोड़ डालर का कर्ज लेने के बाद भी वह डूब रहा था। मूलध न तो दूर की बात ब्याज भी चुका नहीं पा रहा था। कर्मचारियों के वेतन से लेकर तमाम सरकारी काम ही बन्द होने के कगार पर पहुँच गए थे। राष्ट्रपति मांग कर रहे थे और भी कर्ज की सुविधा चाहिए। विपक्षी राजी नहीं हो रहे थे। काफी उठापटक के बाद अतिरिक्त 2 लाख 10 हजार करोड़ डॉलर के कर्ज की मंजूरी हासिल की जा सकी। लेकिन उससे भी काम नहीं बन रहा है। अमेरिका में अब करोड़ों बेरोजगार हैं। एक के बाद एक उद्योग धंधे बन्द हो रहे हैं। हाहाकार मचा हुआ है। ऐसी अवस्था है आज के अखबार में खबर छपी है कि सोफ्टवेयर कम्पनी इन्फोसिस और दूसरी भारतीय कम्पनियाँ ताकि भारत से सस्ते में मजदूर न ला सकें इसके लिए वीज़ा फीस बढ़ाई जा रही है। अमेरिकी कम्पनियाँ ताकि अन्य देशों से बिजनेस प्रोसेस आऊट सोर्सिंग न कर सकें इसके लिए दबाव बनाया जा रहा है। ऐसी दुर्दशा क्या इससे पहले अमेरिकी अर्थव्यवस्था की हुई थी? यूरोप में तमाम साम्राज्यवादी देशों में ऐसा ही संकट है। सभी कर्ज के संकट से जूझ रहे हैं। वहाँ भी व्यापक छंटनी, बेरोजगारी, मुद्रास्फीति जारी है। किसी भी तरह से इस मंदी से बाहर नहीं निकल पा रहे हैं। यूरोप की बाजार अर्थव्यवस्था एटलांटिक महासागर में डूबती जा रही है।

मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिवा मुक्ति का और कोई रास्ता नहीं

क्यों यह संकट पैदा हुआ? इसका उत्तर खोजने के लिए मार्क्सवाद की शरण में जाना होगा। जब दुनिया में पूँजीवाद प्रगति के दौर में था, एकाधिकारी पूँजी साम्राज्यवादी स्तर पर नहीं आई थी, जब पूँजीवादी बाजार अर्थव्यवस्था ने मंदी, कारखानाबन्दी, छंटनी–यह सब नहीं देखा था, यह सब कोई सोच भी नहीं सकता था, तब मार्क्स ने द्वन्द्वात्मक वस्तुवाद प्रयोग करके, बुर्जुआ अर्थव्यवस्था का विश्लेषण करके दिखाया था कि इस बाजार अर्थव्यवस्था का बाजार नहीं रहेगा। पूँजीवाद ही अपना संकट पैदा करेगा, क्रान्ति की अग्रगति को रोकेगा। उन्होंने दिखाया था कि पूँजीवादी बाजार किसको लेकर बनता है? मेहनतकश जनता को लेकर ही तो बाजार है। फिर इस मेहनतकश जनता का शोषण करके ही तो पूँजीपतियों का मुनाफा होता है। उन्होंने दिखाया था, कांस्टेण्ट केपिटल अर्थात् जो पूँजी मशीन और कच्चे माल के लिए खर्च होती है उस पूँजी से अतिरिक्त मूल्य नहीं आता है। लेकिन वेरिएबल केपिटल अर्थात् जो पूँजी श्रम शक्ति खरीदने के लिए खर्च होती है उसी से अतिरिक्त मूल्य आता है। अतिरिक्त मूल्य अदा न किए गए अतिरिक्त श्रम से अर्थात् जिस श्रम का मूल नहीं चुकाया गया उससे आता है। इसी अतिरिक्त मूल्य से ही पूँजीपति मुनाफा अर्जित करते हैं, पूँजी बढ़ाते हैं। न्यायसंगत मूल्य से वंचित मजदूर जीवन की जरूरतें होते हुए भी खरीद शक्ति न रहने की वजह से बाजार से सामान खरीद नहीं पाते हैं। इसीलिए देखिए, अमेरिकी साम्राज्यवाद, यूरोप से लेकर सभी पूँजीवादी देशों में आज और मांग संचालित इकॉनोमी उस तरह नहीं चल रही है। बाजार चालू रखने के लिए क्रेडिट ड्राइवन इकॉनोमी चालू करनी पड़ रही है। फिर भी बाजार की हालत सुधर नहीं रही है, उल्टे और संकट को बुलावा दे रहा है।

आज हमारे देश में सभी सरकारी पार्टियाँ पंचम स्वर में राग अलाप रही हैं कि वे 'विकास' करा रही है। लेकिन विकास के नाम पर क्या हो रहा है यह आप जानते ही हैं? विकास क्या हुआ नहीं? विश्व के 10 सबसे धनाढ्यों की सूची में भारत के पाँच परिवार हैं। ताजा आंकड़ों के मुताबिक ये 4 एकाधिकारी घराने 9,00,000 करोड़ रुपये से अधिक के मालिक हैं। भारत के पहले 10 अमीर परिवार 12,35,000 करोड़ रुपये के मालिक हैं। डलरों में अरबपतियों (5000 करोढ़ 3पये के मालिकों) की संख्या भी बढ़ती जा रही है। यहाँ तक कि भारत में संसद के जो सदस्य हैं उनकी एक विशाल संख्या करोड़ों करोड़ रुपयों की मालिक है। यही हैं जन प्रतिनिधि। भारत लगभग 110 करोड़ लोगों का देश है। 85 करोड़ लोग की कमाई रोजाना 20 रुपये है। यही है विकास का नजारा! गाँवों से लाखों लाख लोग चले आ रहे हैं। गाँव में युवकों को नहीं पाएंगे, यहाँ तक कि महिलाएँ भी चली आ रही हैं। सभी चले आ रहे हैं शहरों की ओर। सभी माइग्रेण्ट लेबर हैं। घर नहीं, किसी को झोंपड़ी है तो बहुत सारों को झोंपड़ी भी नसीब नहीं, फुटपाथ पर बसेरा है। नेतागण 15 अगस्त को जश्न मनाते हैं, 26 जनवरी को जश्न मनाते है। होटलों में उत्सव करते हैं और जो झूठन कूड़ेदान में फैंकते हैं, झोंपड़ी के लोग बीन कर खाते हैं कुत्तों के साथ मारामारी करते हुए। यही तो देश का चेहरा है। यही है विकास। इसकी खबर कौन रखता है? माँ-बाप लड़की को बेच दे रहे हैं। ले जा रहे है व्यापारी। नारी तस्करी एक विराट व्यवसाय बन गया है। भूख से, बिना इलाज के लाखों लोग मर रहे हैं, लाखों लोग अभाव की ज्वाला में आत्महत्या कर रहे हैं। यही यदि देश की प्रगति है तो अद्योगति किसे कहेंगे?

यहाँ कॉरपोरेट सैक्टर, मल्टीनेशनल की संख्या बढ़ रही है, इनके मुनाफे का अम्बार लगता जा रहा है। विकास इनका ही हो रहा है। दूसरी तरफ भारतीय पूँजीवाद अब अमेरिका के साथ स्ट्रेटिजिक पार्टनरशिप कर रहा है। क्योंकि भारत ने आज सिर्फ पूँजीवादी ही नहीं बल्कि लेनिन की भाषा में एकाधिकारी पूँजी, साम्राज्यवादी वित्तीय पूँजी का चरित्र हासिल कर लिया है। भारत आज साम्राज्यवादी राष्ट्र बन कर उभरा है, अमेरिका के साथ हाथ मिलाकर सुपर पॉवर बन रहा है। भारत ने 25 बिलियन रुपये खर्च करके अग्नि 5 का प्रक्षेपण किया है हालांकि देश में करोडों लोग रास्ते के भिखारी हैं, रास्ते में कितनी माँएं अपने गोद के बच्चे को लेकर रो रही हैं एक मुटठी खाने की आशा में, इस पर कोई नजर नहीं। चीन क्या भारत पर कब्जा करने आ रहा है? क्या पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका भारत को निगल जाएंगे? यह सैनिक तैयारी किसके स्वार्थ में? भारत की एकाधिकारी पूँजी के स्वार्थ में। क्योंकि सुपर पॉवर बनने के लिए, अन्यत्र आधिपत्य कायम करने के लिए उसकी सामरिक ताकत में वृद्धि चाहिए। इसी बीच भारतीय कोरपोरेट सैक्टर एशिया, मध्यपूर्व, यूरोप, आस्ट्रेलिया, यहाँ तक कि अमेरिका में भी कारखाने खरीद रहा है, ज्वाइट वेन्चर्स कर रहा है, खदानें भी खरीद रहा है।

सीपीएम के विचार से पूँजीवाद प्रगतिशील है

इसी पूँजीवाद को सीपीएम के नेतागण प्रगतिशील बता रहे हैं। इस बार भी केरल पार्टी कांग्रेस में जनगणतांत्रिक क्रान्ति की थिसिस को उन्होंने बरकरार रखा है। जनगणतांत्रिक क्रान्ति है, 'प्रगतिशील पूँजीपति वर्ग' को मजदूर वर्ग की क्रान्ति का दोस्त बनाकर सामन्तवाद और साम्राज्यवाद के खिलाफ क्रान्ति। यही यदि मार्क्सवादी विचार हो तो लेनिन मार्क्सवादी नहीं थे। क्योंकि 1917 की नवम्बर क्रान्ति से पहले पूँजीवाद ने केवलमात्र राजसत्ता दखल की थी, अर्थव्यवस्था में तब भी पूँजीवाद बहुत ही कमजोर था, कृषि में सामंतवाद का दबदबा था, इसके बावजूद लेनिन ने पूँजीवादी राजसत्ता के खिलाफ समाजवादी क्रान्ति का आह्वान किया था और भारत में जो पूँजीवाद साम्राज्यवाद के स्तर में चला गया, उसकों ये प्रगतिशील बता रहे हैं। असल में यह एक सुविधावादी बन्दोबस्त है। क्योंकि इस सिद्धान्त की दुहाई देकर वे कभी साम्प्रदायिकता के खिलाफ आवाज उठा कर पूँजीवादी कांगेस के साथ हाथ मिलाते हैं, कभी स्वेच्छाचार के खिलाफ नारा उठा कर बुर्जुआ पार्टी भाजपा के साथ हाथ मिलाते हैं। इसी प्रकार वे केरल, पश्चिम बंग में सरकारी गद्दी पर बैठते हैं और वोट बैंक की राजनीति, जात-पात की राजनीति वे भी कर रहे हैं। सीपीएम ने तो केरल में मुसलमानों के लिए एक जिला ही बना दिया वोट पाने के लिए। ये है सीपीएम। गत चुनावों में भी सीपीएम इस राज्य में अल्पसंख्यकों की त्राता होने का प्रयास कर रही थी। इस राज्य में तृणमूल भी उसी पथ का राही है। पश्चिम बंग में इमामों के दुख से दुखी हो कर उनके विशेष भत्ते की घोषणा कर दी। पुरोहितों ने कहा हमें भी देना होगा। अत: पुरोहितों और इमामों की लड़ाई चलती रहे। सभी कुछ वोट बैंक के लिए है। राज्य राज्य में अब सभी पार्टियाँ धर्म, जात-पात, वर्ण, भाषागत विरोध लेकर वोट बैंक की राजनीति कर रही हैं और जनता की जनवादी एकता पर चोट कर रही हैं।

पूँजीवाद ही राजनीति को अध:पतित कर रहा है

अत: पूँजीवादी अर्थव्यवस्था ने बहुत पहले ही प्रथम युग की मुक्त प्रतियोगिता का अतिक्रमण करके एकाधिकारी पूँजी, वित्तीय पूँजी के स्तर में आकर मल्टीनेशनलों को जन्म दे दिया है। यही मल्टीनेशनल आज दुनिया के अघोषित सम्राट हैं। सारी सम्पदा उनकी मुट्ठी में है। ये कोई भी देश, कोई भी राष्ट्र नहीं मानती हैं। सिर्फ मुनाफा और मुनाफा। इसके लिए वे अपनी-अपनी राष्ट्रीय पहचान को भी छोड़ने को तैयार हैं। इसके फलस्वरूप पूरी दुनिया और हमारे देश में भी घोर गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी, छंटनी बढ़ती ही जा रही है और बढ़ती ही जाएगी। यही पूँजीवाद राजनीतिज्ञों को आज शैतान बना रहा है, झूठे-पाखण्डी बना रहा है, गिरे हुए धोखेबाज

(शेष पृष्ठ 6 पर)

मध्यप्रदेश में पार्टी स्थापना दिवस पर रैली व जनसभा

भोपाल, म.प्र.: एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) राज्य सांगठनिक समिति के तत्वावधान में 24 अप्रैल को पार्टी स्थापना दिवस के अवसर पर विभिन्न जिलों से शामिल हुए कार्यकताओं की रैली की गई। रैली सागर शहर के मेडिकल कॉलेज से होते हुए तिली हाई स्कूल के सामने जनसभा में तब्दील हो गई। सभा के मुख्य वक्ता पार्टी के केन्द्रीय प्रतिनिधि कॉमरेड शंकर दासगुप्ता ने कहा कि समाज के क्रान्तिकारी परिवर्तन के लिए केवल त्याग व बलिदान नहीं, बल्कि विज्ञानसम्मत समझदारी व पद्धति की जरूरत होगी। मार्क्सवाद, लेनिनवाद जीवनदर्शन है। इस युग के अन्यतम मार्क्सवादी चिन्तक कॉमरेड शिवदास घोष निजी संपत्ति, परिवार, यौनता, प्रेमप्रीति आदि जीवन के सभी पहलुओं में इस दर्शन को लागू करते हुए ऊँचा कम्युनिस्ट चरित्र व श्रेष्ठ सर्वहारा संस्कृति हासिल कर सके। हमें भी इसी तरह का संघर्ष अपने जीवन में चलाना होगा तभी हम देश की पूँजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रान्ति की प्रक्रिया को आगे बढ़ा सकेंगे। सभा की अध्यक्षता पार्टी के राज्य सांगठनिक समिति सदस्य कॉ. रामावतार शर्मा ने की। पार्टी के राज्य सचिव कॉमरेड उमाप्रसाद ने भी अपने विचार रखे। सभा का संचालन पार्टी के राज्य सांगठनिक समिति के सदस्य कॉ. जे.सी. बरई ने किया।

कॉ. प्रभाष घोष का भाषण...

(पृष्ठ 5 का शेष)

बना रहा है। सिर्फ गद्दी और पूँजीपतियों की गुलामी के सिवा वे और कुछ नहीं पहचानते हैं। यह पूँजीवाद इन्सानियत की हत्या कर रहा है। जिस यूरोप ने एक समय मानवतावाद के झण्डे को बुलंद किया था, जिस यूरोप ने शेक्सपीयर को जन्म दिया था, विक्टर ह्यूगो, एमिल जोला, टॉलस्टाय, तुर्गनेव, दोस्तायेव्स्की को पैदा किया था, वह यूरोप आज कहाँ है? उस यूरोप के युवकों के सामने आज कोई आदर्श है क्या? वहाँ स्कूल के छात्रों के लिए कांट्रासेप्टिव देने पड़ते हैं। छोटे-छोटे लड़के-लड़कियों में अब यौन सम्बन्ध बन रहे हैं। यौनदास तैयार हो रहे हैं। मांग उठ रही है समलैंगिक सम्बंधों की। लिव टूगेदर को कानूनी बनाओ। वहाँ भी प्रेम, प्यार, विवाहित जीवन आज सब मृग मरिचिका की तरह हो गया है। बूढ़े माँ-बाप की जिम्मेदारी कोई ले नहीं रहा है, छोटे बच्चों की देखभाल की जिम्मेदारी नहीं। सिर्फ मौज-मस्ती, जीवन में बाकी सब फिजूल की बातें मान ली हैं। इस तरह मनुष्यत्व ध्वंस किये बिना साम्राज्यवादी शोषण लूट नहीं चलाई जा सकेगी, दूसरे देशों पर आक्रमण और कब्जा नहीं किया जा सकेगा। जिस यूरोप को देख कर राममोहन, विद्यासागर मुग्ध हुए थे, वह यूरोप अब कहाँ विस्मृति के गर्त में चला गया?

हमारे देश में भी युवकों का आज जो हाल आप देख रहे हैं, इसके लिए क्या कोई व्यक्तिविशेष जिम्मेदार हैं? युवक यौवन पाते हैं, तेजस्वी बनते हैं यदि देश में नीति-नैतिकता रहे। यही तेज, यही साहस एक समय स्वदेशी आन्दोलन ने दिया था, आजादी आन्दोलन ने दिया था। आज वह नैतिकता मर गई है। स्वाधीनता आन्दोलन का रास्ता अपनाकर, इसी बुर्जुआ स्वाधीनतावाद का रास्ता अपनाकर देश में राष्ट्रीय पूँजीवाद सत्ता में आया है। आज वही पूँजीवाद शोषण लूट चला रहा है, अत्याचार कर रहा है, मनुष्यत्व का गला घोंट कर मार रहा है। इसीलिए महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष ने दुख के साथ कहा था, वे जानते हैं कि तोप-बन्दूक से भी शोषित पीड़ित लोगों के प्रतिवाद को ध्वस्त नहीं किया जा सकता है यदि उनकी चेतना में खुदीराम रहे, भगतसिंह रहे, प्रीतिलता रहे, चन्द्रशेखर आजाद रहे, अश्फाक उल्ला रहे। इसीलिए वे मनुष्यत्व को मारना चाहते हैं। मनुष्य को पशु बना देना चाहते हैं। इसके फलस्वरूप ही निरन्तर बढ़ रहे हैं बलात्कार, सामूहिक बलात्कार, नारी भ्रूण हत्या, ऑनर किलिंग, दहेज हत्या। लड़कियों का गला दबा कर मारा जा रहा है, बेच दिया जा रहा है। दिल्ली में 22 वर्ष के लड़के ने अपनी दादी की उम्र की 66 साल की बुजुर्ग महिला का रेप किया। 60 वर्ष के वृद्ध ने 3 साल की बच्ची का रेप किया है। पति सुहागरात में ही पत्नी को बेच दे रहा है। इसी तरह के मनुष्य तो पूँजीवाद तैयार कर रहा है। ऐसी बातें क्या बीसवीं सदी के दूसरे, तीसरे, चौथे दशक में होती थी? तब क्या युवक नहीं थे, किशोर नहीं थे? उनकी क्या यौवन की दैहिक जरूरत नहीं थी? लेकिन वे क्या पार्क में बैठकर शराब पीते थे? लड़कियों को देख कर फब्तियाँ कसते थे, इतराते थे, उठा ले जाते थे? नहीं, ये सब बातें नहीं थी। उस समय के मनीषी, देश के नेता, क्रान्तिकारी उनके सामने आदर्श थे। फिर आज स्वाधीन भारत का चेहरा क्या है? विद्यासागर, विवेकानन्द, रवीन्द्रनाथ, देशबन्धु, सुभाष चन्द्र, लाला लाजपत राय, तिलक, शरतचन्द्र, नज़रूल आदि ने क्या कभी सपने में भी यह सोचा भी था कि देश की ऐसी परिणति होगी? क्या कोई भी पार्टी इस समस्या को लेकर गम्भीरता से सोच रही है? उल्टे वे इस गन्दी संस्कृति को मदद दे रहे हैं। यही जो इतना तामझाम करके विवेकानन्द, रवीन्द्रनाथ की 150वीं जयन्ती मनाई जा रही है, कितने भाषण दिए जा रहे हैं, कितना माल्यार्पण हो रहा है, लेकिन असल में क्या विवेकानन्द, रवीन्द्रनाथ को स्मरण किया जा रहा है? विवेकानन्द, रवीन्द्रनाथ के विचारों के जो पहलू उनके लिए सुविधाजनक हैं, उन्हीं को हाइलाइट कर रहे हैं और जिनसे असुविधा हो उनका नाम तक नहीं लेते हैं। वे विवेकानन्द की वेदांत व्याख्या का बखान कर रहे हैं, अध्यात्मवाद का बखान कर रहे हैं क्योंकि इससे उनको सुविधा हो रही है। जिस विवेकानन्द ने कहा था, ''लाखों-लाख दरिद्र निरीह नर-नारियों के सीने के खून से अर्जित धन से शिक्षा लाभ करके एवं विलासिता में आकण्ठ जो डूबे रह कर भी जो इन दरिद्रों की बात एक बार भी सोचने का अवसर नहीं निकाल पाते हैं–उनको मैं विश्वासघाती कहूँगा। जब भारत के करोड़ों करोड़ लोग अज्ञानता में डूबे रहेंगे, तब तक उन्ही के पैसे से निश्चिंत फिर भी उनकी तरफ मुड़कर नहीं देखते हैं–उस हरेक आदमी को मैं देशद्रोही मानता हूँ।'' जो ये सब विवेकानन्द के भक्त 150वीं जयन्ती पर उनकी फोटो पर माला चढ़ा रहे हैं, दक्षिणेश्वर जाते हैं, बेलूर मठ दौड़ते हैं उनमें बहुत शिक्षित, उच्च शिक्षित हैं वे क्या एक बार भी विवेकानन्द के इस ऐतिहासिक वक्तव्य को याद करते हैं। वे क्या एक बार भी सोच कर देखते हैं कि विवेकानन्द के इस वैचारिक मापदण्ड में उनका स्थान कहाँ है? यही विवेकानन्द जो कह रहे हैं कि 'भारत के करोड़ों-करोड़ दुखी लोग कातर कण्ठ से सिर्फ रोटी चाह रहे हैं। वे हमारे से रोटी चाहते हैं और हम उनको पत्थर दे रहे हैं। भूखे आदमी को धर्म सिखाना या दर्शन समझाना उनका अपमान करना है।'' –क्या उस विवेकानन्द को वे पहचानते हैं? जिन्होंने कहा था, जिस देश में करोड़ों करोड़ लोग महुआ के फूल खाकर रहते हैं और हजारों साधु और हजारों ब्राह्मण इन गरीबों का रक्त चूस रहे हैं, उनकी उन्नति का कोई प्रयास नहीं करते हैं, ये क्या है स्वर्ग या नरक! यह धर्म है या पिशाच नृत्य। इस विवेकानन्द को वे जानते हैं क्या? नहीं, नहीं जानते हैं। पहचानने से उन्हें असुविधा होगी। जिस रवीन्द्रनाथ ने प्रकृति का वर्णन किया था, शरद, वसन्त, वर्षा, विभिन्न ऋतु लेकर, प्रेम-प्यार लेकर कितना लिखा था, अध्यात्मवाद लेकर कितनी रचनाएं की थी। एक दल जो खुद को रवीन्द्र प्रेमी कहकर परिचय देते हैं, वे इन्हीं सबको लेकर मस्त हैं। लेकिन वे क्या जानत हैं वही रवीन्द्रनाथ अपने जीवन के अन्तिम पड़ाव पर पूँजीवाद का संकट देख कर छटपटाए थे, साम्राज्यवाद, फासीवाद को धिक्कारते हुए कविता लिखी थी?

27 अप्रैल को अगरतला में पार्टी स्थापना दिवस पर सभा।
मुख्य वक्ता थे पार्टी के झारखण्ड राज्य सचिव कॉमरेड रबिन समाजपति

अतीत के मनीषियों के चरित्र और योगदान को समझे बिना मार्क्सवाद नहीं समझा जाएगा

दूसरी तरफ विद्यासागर, शरतचन्द्र तो लगभग विलुप्त हैं। साप्ताहिक, मासिक, दैनिक पत्र-पत्रिकाओं में इनका नामोनिशान तक खोजने से नहीं मिलेगा। हालांकि इस युग में इन्हीं विद्यासागर ने उच्च स्वर में घोषणा की थी, ''...सांख्य और वेदान्त मिथ्या दर्शन हैं यह कोई विवादास्पद विषय नहीं है।' कहा था, 'यूरोप से ऐसी पुस्तकें पढ़ानी होंगी, जिससे देश के छात्र वेदान्त के प्रभाव से मुक्त हों' वे ईश्वर विश्वासी नहीं थे यह जानते हुए भी रामकृष्ण परमहंस उनको श्रद्धा देने के लिए दौड़े-दौड़े उनके घर गए थे। पूरे नवजागरणकाल के, स्वदेशी आन्दोलन के मनीषियों ने श्रद्धा से उनके चरणों में मस्तक नवाया था। गम्भीर श्रद्धा से रवीन्द्रनाथ ने कहा था, 'दया नहीं, विद्या नहीं, ईश्वरचन्द्र विद्यागसागर के चरित्र में प्रधान गौरव था उनका अजेय पौरुष, उनका अक्षय मनुष्यत्व', आज इन्हीं विद्यासागर को याद नहीं कराया जाता है। जिस क्रान्तिकारी मानवतावादी साहित्यकार शरतचन्द्र के बारे में रवीन्द्रनाथ ने कहा था, साहित्य में मैं जो नहीं कर सका शरतचन्द्र वह कर सके। मनुष्य के हृदय के अन्त:पुर में वे पहुँच सके। इस देश का सर्वजनीन आतिथ्य उन्होंने पाया था। यहाँ तक कि रोमा रोलाँ ने कहा था, 'शरतचन्द्र हमारे युग के बंगाली भाषा में श्रेष्ठ साहित्यकार हैं'। जिन शरतचन्द्र ने उस युग में ही पूँजीवाद के संकट को देखकर कहा था, ''...सभ्यता की जरूरत से धनी का धन के लिए लोभ मनुष्य को कितना बड़ा हृदयहीन पशु बना दे सकता है...यह जानकारी मेरे सारे जीवन के लिए संचित हो गई है।....सभ्य लोगों ने यह बात लगता है अच्छी तरह समझ ली है कि मनुष्य को पशु बनाये बिना पशु का काम नहीं लिया जा सकता है।'' कह रहे हैं, ''मनुष्य का मरना मुझे उतना चोट नहीं पहुँचाता है, जितना मनुष्यत्व का मरना'' इन्हीं शतरचन्द्र को आज विस्मृति के गर्त में विसर्जित किया जा रहा है। खुदीराम प्रीतिलता–इनको आज कौन जानता है? ये सब नाम ही लगभग विलुप्त हो गए हैं। पूँजीवादी राष्ट्रनायक इन सब महान चरित्रों की याद को भुला देना चाहते हैं। सिर्फ एक आदमी ने हमें याद कराया, वे थे कॉमरेड शिवदास घोष, उन्होंने कहा था, इनको पहचाने बिना मुझे भी नहीं पहचान पाओगे, इनको समझे बिना मार्क्सवाद को भी नहीं समझ पाओगे। कहा था, इनसे मैने भी सीखा था, सीखकर मार्क्सवाद को मैं पहचान सका। इसीलिए हम इन सब मनीषियों को याद करते हैं। क्रान्तिकारियों को याद करते हैं। हम चाहते हैं देश में फिर से नए खुदीराम, प्रीतिलता आएं, भगतसिंह, अशफाक उल्ला, सूर्यसेन आएं, जो पूँजीवाद-विरोधी संघर्ष का झण्डा बुलंद करेंगे।

सभी प्रयास वैज्ञानिक समाजवाद की दिशा में होने चाहिएं

इस तरह की एक भयंकर परिस्थिति में चाहिए पूँजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रान्ति और क्रान्ति करने के लिए चाहिए मार्क्सवाद-लेनिनवाद कॉमरेड शिवदास घोष चिन्तनधारा। आप जानते हैं समाजवाद के खिलाफ कुप्रचार में बुद्धिजीवियों का एक हिस्सा आत्मसंतुष्टि प्राप्त करता है। वे यदि बुद्धिजीवी हैं तब तो इससे हम यही निष्कर्ष निकालेंगे कि रोमाँ रोलाँ, बर्नाड शा, आइनस्टीन, रवीन्द्रनाथ बुद्धिजीवी नहीं थे। क्या वे स्वयंभू बुद्धिजीवी जानते हैं, एक समय विश्वविख्यात मनीषी रोमाँ रोलाँ ने पूरे यूरोप के पूँजीवाद फासीवाद का रूप देख कर अत्यन्त उद्वेलित हो कर कहा था, ''सोवियत समाजवाद के उद्देश्य और लक्ष्य के साथ मैं एकमत हूँ। जब तक मेरे शरीर में प्राण हैं मैं सावियत का समर्थनक बना रहूँगा।'' कहा था, ''सोवियत समाजवाद का यदि किसी दिन ध्वंस हो गया तब सिर्फ इतना हीं नही कि रूस के सर्वहारा ही गुलाम होंगें, बल्कि समग्र दुनिया में व्यक्ति स्वाधीनता, सामाजिक स्वाधीनता खतरे में पड़ जाएगी।'' बर्नाड शॉ ने 1950 में मृत्यु से एक वर्ष पहले कहा था, ''भविष्य में यही एक देश है जो देश कम्युनिज़्म की तरफ तीव्र गति से आगे बढ़ेगा।'' वे कम्युनिस्ट नहीं थे। आइनस्टीन ने कहा था, 'समाजवाद ही मुक्ति का एकमात्र रास्ता है, बचने का रास्ते है।' यही पाश्चात्य मानवतावाद के अन्तिम प्रतिनिधि थे।....

समाजवाद ही मुक्ति का एकमात्र रास्ता है

सोवियत समाजवाद क्यों ध्वस्त हुआ, इसे लेकर अतीत में अनेक चर्चाएं की हैं। आज मैं और उसमें नहीं

(शेष पृष्ठ 7 पर)

कॉ. प्रभाष घोष का भाषण...

(पृष्ठ 6 का शेष)

जा रहा हूँ लेकिन एक बात का उल्लेख करना चाहूँगा। कोई भी बड़ा सामाजिक आन्दोलन अतीत में कभी भी, महज पचास से सौ वर्षों में जीत हासिल नहीं कर सका था। जो धर्मप्रचारक हुए उन सभी को जीत हासिल करने के लिए सौ-सौ साल लड़ाई लड़नी पड़ी थी। बहुत समय तक पराजय जय, फिर से पराजय फिर जय, इसी रास्ते का अनुसरण करते जाना पड़ा था। कइयों को जान भी गँवानी पड़ी थी हालाँकि उनके सम्बन्ध में दावा किया जाता है कि वे भगवान के दूत हैं। लेकिन इतिहास के नियम को वे भी नकार नहीं कर सके। नवजागरण से लेकर बुर्जुआ जनतांत्रिक क्रान्ति सफल करने तक में लगभग साढ़े तीन सौ वर्ष लड़ाई करनी पड़ी थी। लेकिन न तो धार्मिक आन्दोलन और न ही बुर्जुआ जनतांत्रिक आन्दोलन मानव द्वारा मानव के शोषण का उन्मूलन करने का कोई आन्दोलन था। एक तरह के शोषण के बदले दूसरे एक तरह का शोषण कायम हुआ था। लेकिन समाजवाद है दास प्रथा, सामंतवाद, पूँजीवाद–कई एक हजार वर्ष के शोषण को उखाड़ फेंकने की क्रान्ति। वहाँ समाजवाद के 70 वर्ष भला कितना समय है। लेकिन इन कुछेक वर्षों में ही समाजवाद ने दिखा दिया था शोषण मुक्त समाज किसको कहते हैं। इसमें भूख से किसी की मृत्यु होगी ऐसा कतई नहीं था, छंटनी और बेरोजगारी नाम की कोई चीज नहीं थी। सभी के लिए मुफ्त शिक्षा और चिकित्सा का बन्दोबस्त था, जाति-धर्म से निरपेक्ष सभी की एकता थी। नर-नारी के समान अधिकार थे। निरन्तर जीवन यापन का स्तर ऊँचा उठ रहा था। मन्दी, कारखानाबन्दी, मुद्रास्फीति आदि कुछ नहीं था, किसी भी देश में बुर्जुआ जनतन्त्र क्या ये सब दे सका? इसी संसदीय जनतन्त्र का झण्डा फहराते हुए तो पूँजीपतियों ने दुनिया में उपनिवेशों, अर्ध-उपनिवेशों को लूटा था, प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध की आग में जलाया था, फासीवाद को जन्म दिया था। यही झण्डा फहराते हुए तो अमेरिकी साम्राज्यवाद ने एक सार्वभौम राष्ट्र इराक को ध्वस्त किया था, देश-देश में आक्रमण चला रहा है, संहारक हथियार तैयार कर रहा है। सोवियत समाजवाद ने क्या कहीं इस तरह का आक्रमण किया था? बल्कि सभी स्वाधीनता संग्रामों के पक्ष में तमाम साम्राज्यवादी युद्धों के खिलाफ शान्ति की शक्ति बन कर खड़ा हुआ था। मार्क्स एंगेल्स से लेकर लेनिन, स्टॉलिन, माओ त्से-तुंग, शिवदास घोष सभी ने कहा था समाजवाद एक संक्रमणकालीन स्तर है। जहाँ से सही रास्ते पर चलने से कम्युनिज़्म में पहुँचा जा सकता है, फिर भटकाव होने से दोबारा पूँजीवाद वापस आ जाएगा। क्योंकि समाजवाद में सत्ता से बेदखल पूँजीवाद गुप्त षड़यन्त्र करता है। जैसे रूस में किया, चीन में किया। विदेशी साम्राज्यवाद ने भी उनको हर तरह की मदद प्रदान की थी। स्टालिन और माओ त्से-तुंग मृत्यु से पहले प्रतिक्रान्ति के बारे में चेतावनी देकर गए थे। लेकिन पार्टी के नेता-कार्यकर्ता एवं जनता आत्मतुष्टि के मनोभाव की वजह से इस षड़यन्त्र के बारे में सतर्क नहीं थे। परिणामत: सर्वनाश हो गया। समाजवाद को ध्वस्त कर दिया गया। यह गम्भीर वेदना की बात है। आज रोमाँ रोलाँ, बर्नाड शॉ, रवीन्द्रनाथ होते तो बहुत व्यथित होते।

एकमात्र समाजवाद ही बचने का रास्ता है। केवल मार्क्सवाद-लेनिनवाद, कॉमरेड शिवदास घोष चिन्तनधारा ही मुक्ति का रास्ता दिखा सकती है। यही विश्वास रखते हुए आप इस पार्टी को मजबूत करें। कल-कारखानों में, गाँव-शहरों में मजदूरों, खेतमजदूरों, गरीब किसानों के बीच संघर्षवाहिनी गठित करें। क्रान्तिकारी राजनीति का अनुशीलन करें। कॉमरेड शिवदास घोष ने कहा था, क्रान्तिकारी राजनीति के प्राण, उन्नत चरित्र के मान में हैं। हमारी पार्टी के लड़के-लड़कियाँ भद्र है, नम्र हैं। आप में से कइयों ने कहा है। लेकिन इसका स्रोत कहाँ है? इसका स्रोत है कॉमरेड शिवदास घोष द्वारा प्रदर्शित राजनीति में। इसमें चरित्र गठन, मनुष्यत्व निर्माण की जीवन्त साधना चलती है। इसी तरह हम पार्टी का गठन कर रहे हैं। इसी तरह हम पार्टी का गठन करेंगे। हमने केन्द्र सरकार के खिलाफ व्यापक आन्दोलन शुरू कर दिया है। 14 मार्च को दिल्ली में हुए ऐतिहासिक जुलूस से इसकी शुरूआत हुई है। राज्य-राज्य में आन्दोलन होगा। इस राज्य में भी हम आन्दोलन करेंगे। आपका सम्पूर्ण सहयोग चाहिए। यही बात कह कर ही मैं यहाँ समाप्त करता हूँ। ●●

बस सर्विस को पुन: चालू करने की माँग पर धरना-प्रदर्शन

जे.पी. नगर (उत्तर प्रदेश) : अक्टूबर 2011 में एआईडीएसओ जे.पी.नगर इकाई द्वारा भवालपुर क्षेत्र में रोडवेज बस चलाने की मांग को लेकर एक आंदोलन चलाया गया। जिसके दवाब में परिवहन निगम ने दिसम्बर 2011 में जे.पी.नगर से भीमनगर जिला मुख्यालय तक रोडवेज बस सर्विस चालू भी कर दी थी। लेकिन लगभग दो महीने बस चलाने के बाद परिवहन निगम ने लोड फैक्टर कम होने का बहाना करके बस सर्विस अचानक बंद कर दी। इससे क्षेत्रीय लोगों व विद्यार्थियों, जिनका हित इस बस सर्विस के साथ जुड़ा था, जबरदस्त रोष पैदा हो गया। तब एआईडीएसओ तथा मेहनतकश जनसंघर्ष समिति ने संयुक्त रूप से क्षेत्रीय लोगों व विद्यार्थियों को संगठित करके इस बस सर्विस को पुन: चालू करने के लिए आंदोलन चलाया। इसी आंदोलन के क्रम 3 अप्रैल 2012 को क्षेत्रीय परिवहन निगम कार्यालय, मुरादाबाद पर एक विशाल धरना-प्रदर्शन आयोजित किया गया जिसमें बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक ने भाग लिया। एक ज्ञापन के द्वारा आरएम.को एक सप्ताह के अंदर बस सर्विस को पुन: चालू करने का अल्टीमेंटम दिया गया। परिवहन निगम को जनआंदोलन के दवाब में आकर बस सर्विस पुन: एक सप्ताह में चालू करनी पड़ी और इस बात को सुनिश्चित करने के लिए कि इस बार लोड फैक्टर कम न रहे बस के मार्ग की दूरी को 50 किलोमीटर बढ़ा भी दिया गया। अब ये बस सर्विस सुचारू रूप से चल रही है। क्षेत्रीय परिवहन निगम कार्यालय मुरादाबाद पर हुए धरने-प्रदर्शन को एसयूसीआई(सी) जे.पी.नगर जिला इंचार्ज कॉ. शीलकुमार, मेहनतकश जनसंघर्ष समिति के सचिव कॉ. गंभीर सिंह तथा एआईडीएसओ की ओर से कॉ.ऋतु चौधरी ने सम्बोधित किया।

इसके अलावा, एआईडीएसओ जे.पी.नगर यूनिट के इंचार्ज कॉ. नीरज के गेहूं के खेत को कुछ असामाजिक तत्वों ने संगठन की गतिविधियों में विघ्न डालने तथा संगठन को नुकसान पहुंचाने के उद्देश्य से आग लगा दी। इससे पूरा गेहूं जलकर राख हो गया और खाने के लिए एक दाना भी गेहूं शेष नहीं बचा। तब इस नुकसान की भरपाई करने के लिए एआईडीएसओ व मेहनतकश जनसंघर्ष समिति द्वारा गांव भर से अनाज इक्ट्ठा करने का अभियान चलाया गया। इस अभियान को जिसने आंदोलन का रूप लिया, गांव की जनता का उत्साहवर्धक सहयोग मिला जिससे कि अनुमानित नुकसान का लगभग दो गुना अनाज इस अभियान के द्वारा इकट्ठा किया गया।

पानी की समस्या के खिलाफ प्रदर्शन

एस.यू.सी.आई. (कम्युनिस्ट) जिला संगठन समिति दुर्ग, छ.ग. के तत्वावधाान में वार्ड 19 व 22 तितुरडीह मोहल्ले में पानी की विकट समस्या के खिलाफ नगर निगम दुर्ग में रैली व प्रदर्शन कर आयुक्त को ज्ञापन सौंपा। मांग की गई कि पानी की समस्या का स्थायी समाधान करने हेतु मोहल्ले के सभी नलों का कनेक्शन मोहल्ले में स्थित पानी की टंकी से किया जाए और तत्काल अस्थायी व्यवस्था हेतु सुबह-शाम दो-दो बड़े टैंकरो द्वारा पानी की सप्लाई की जाए। समस्या सुनने के बाद आयुक्त द्वारा दो-दो बड़े टैंकरो में पानी की व्यवस्था करायी गई। इस प्रदर्शन में कॉ. विश्वजीत हारोडे, महेन्द्र साहू, श्रीमति चॉदी बाई, बाजारी बाई, राधा शर्मा, झुनई कौशल, सरिता तॉडी, बबिता, प्रेमबती साहू, हेमकुमार, सुनील, लखन, भूपेन साहू सहित मोहल्ले के करीब 40-50 लोग उपस्थित थे।

रोहतक व गुड़गाँव काण्डों के खिलाफ विरोध प्रदर्शन

भिवानी : रोहतक शहर की श्रीनगर कालोनी में भारत विकास संघ नामक संगठन द्वारा सरकारी धन से संचालित 'अपना घर' नामक संस्था में निरन्तर हो रहे बलात्कार, यौन-शोषण, उन्हें खरीदने-बेचने आदि के वीभत्स काण्ड और गुड़गांव में 'सुपर्णा के आंगन' नामक संस्था के स्कूलों में भी अनाथ बालिकाओं से हुए ऐसे आपराधिक कृत्यों का ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन ने कड़ा विरोध किया। संगठन ने इन काण्डों के दोषियों को उदाहरणमूलक कठोर सजा देने की मांग की।

एमएसएस का एक प्रतिनिधिमण्डल 14 मई को उपायुक्त भिवानी से मिला और उन्हें मुख्यमंत्री के नाम एक ज्ञापन देकर इन काण्डों की जांच सर्वोच्च न्यायालय के पीठासीन जज से कराने की मांग की है। संगठन ने हुड्डा सरकार को धिक्कार देते हुए कहा कि ये काण्ड हरियाणा के समाज पर कलंक हैं जिनके लिए कांग्रेस-नीत प्रदेश सरकार भी जिम्मेदार है। पूरा सरकारी प्रशासन, सरकार के मंत्री और शासक पार्टी कांग्रेस के नेता इन आपराधिक घटनाओं को सरकारी धन के बलबूते पर सरअंजाम देने वाली संस्थाओं को स्वतंत्रता दिवस व गणतंत्र दिवस पर बड़े-बड़े पुरस्कारों व अलंकारों से सुशोभित करते रहे हैं। महिला सांस्कृतिक संगठन ने इन तथ्यों व पहलुओं की भी जांच कराने की मांग की है। निराश्रित बालिकाओं व युवतियों को आश्रय, शिक्षा, रोजगार व पुनर्वास की जिम्मेदारी सरकार को लेनी चाहिए, उनके सम्मान व जीवन की रक्षा और इसकी उचित देखरेख व निगरानी की गारण्टी हो।

संगठन के प्रतिनिधिमण्डल में जिला प्रधान श्रीमती बिमला देवी, बीरमती, प्रेम, मिन्टू बाला, सावित्री, शकुन्तला, लीलावती आदि महिला नेत्रियां शामिल थी।

रेवाड़ी: 14 मई को एआईएमएसएस व एआईडीवाईओ के संयुक्त तत्वावधान में उपायुक्त कार्यालय पर जोरदार प्रदर्शन किया गया। उपायुक्त के माध्यम से मुख्यमंत्री हरियाणा सरकार को ज्ञापन प्रेषित किया गया। धरने को संगठन की नेता कृष्णा यादव, प्रवक्ता प्रीतिलता, सुमन देवी, पूनम देवी, संतोष व डीवाईओ के नेता अनिल कुमार, अजय कुमार, पवन कुमार, सुनील कुमार ने सम्बोधित किया। एसयूसीआई के जिला सचिव कॉमरेड राजेन्द्र सिंह एवं पवित्रा प्रतिष्ठान के संस्थापक, जाने माने समाजसेवी प्रो. अनिरुद्ध ने महिलाओं व युवाओं द्वारा आयोजित इस विक्षोभ आन्दोलन को और भी ऊँचे सौपन पर ले जाने का आग्रह करते हुए कहा कि ऐसे संगठनों के सहारे ही अन्याय के खिलाफ संघर्ष किया जा सकता है। रोहतक में भी ज्ञापन दिया गया।

बहादुरगढ़ में मई दिवस पर जनसभा

126वें मई दिवस के अवसर पर मजदूर कल्याण मंच, बहादुरगढ़ सम्बन्धित एआईयूटीयूसी की ओर से एमआईई बहादुरगढ़ में एक जनसभा आयोजित की गई। सभा की अध्यक्षता मास्टर जयकरण ने की और संचालन कॉ. कपिल प्रसाद ने किया। सभा में औद्योगिक श्रमिकों, आशा वर्करों, मिड डे मील वर्करों, आंगनवाड़ी कर्मियों, ग्रामीण चौकीदारों सहित संगठित-असंगठित क्षेत्र के सैकड़ों मजदूर-कर्मचारी शामिल हुए। शहीद वेदी पर माल्यार्पण करके मई दिवस के शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। सभा को कॉ. लालजी, रामबड़ाई, सतीश कुमार, वेद प्रकाश, हैड मास्टर हरिसिंह दहिया, एडवोकेट उम्मेद सिंह, अनिल प्रधान, सतबीर, रामकिशन, सीताराम, गणेश, संजीवन आदि ने सम्बोधित किया। वक्ताओं ने मई दिवस के गौरवशाली इतिहास व इसके महत्व पर रोशनी डाली। सभा में प्रस्ताव पारित कर सरकार से न्यूनतम वेतन कम से कम 10000 रुपये महीना देने, कच्चे श्रमिकों को पक्के करने, चौकीदारों, आशा, आंगनवाड़ी, मिड डे मील वर्करों-हैल्परों को सरकारी कर्मचारी का दर्जा देने, दुर्घटना में मृत्यु पर 10 लाख मुआवजा देने, ओवर टाइम की डबल मजदूरी देने, सब मजदूरों के बीपीएल कार्ड बनाकर सस्ता राशन देने और उनके बच्चों को शिक्षा सस्ती देने की जोरदार मांग की गई। शोषण-जुल्म के खिलाफ आन्दोलन तेज करने का संकल्प लिया। ''दुनिया के मजदूरो, एक हो'' के नारों के साथ सभा सम्पन्न हुई।

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2012-2014
Posting at IPMBC on 7–8 and 22–23 Fortnightly Date of Printing : 20 May, 2012

बिहार में पार्टी का 64वाँ स्थापना दिवस मनाया गया

पटना (बिहार) : एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) स्थापना की 64 वीं वर्षगांठ के मौके पर 28 अप्रैल को आईएमए हॉल में आयोजित आम सभा में एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) पोलित ब्यूरो सदस्य कॉ. कृष्ण चक्रवर्ती ने कहा कि कम्युनिस्ट पार्टी होती है कम्युनिस्टों का संगठन। पुराने दृष्टिकोण को, पुराने विचार के तरीके को, जिसे हम जन्म से लेकर आते हैं, उससे लड़ना, द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के दृष्टिकोण को अपनाने का संघर्ष ही कम्युनिस्ट बनने का संघर्ष है। बुर्जुआ समाज में जो लोग बुर्जुआ संस्कृति के शिकार हो जाते हैं, उस संस्कृति का मूल आधार है व्यक्तिवाद। व्यक्तिवाद से लड़कर सर्वहारा वर्ग की संस्कृति, जिसे सामूहिकतावाद कहते हैं, को अपनाने का संघर्ष करना होता है। ये दोनों संघर्ष चलाते हुए मुख्यतः द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद और सर्वहारा संस्कृति को हासिल करने पर ही कोई व्यक्ति कम्युनिस्ट बन सकता है। लेनिन की सीखों को विकसित करते हुए कॉ. शिवदास घोष ने दिखाया है कि पार्टी निर्माण का मूल संघर्ष यही है। जो लोग पार्टी निर्माण के लिए संगठित होते हैं, वे जीवन के तमाम पहलुओं को लेकर संघर्ष संचालित करते हैं। सिर्फ यही नहीं, इसके लिए पेशेवर क्रांतिकारियों के एक दस्ते की पैदाइश होना भी जरूरी है। पेशेवर क्रांतिकारियों के दस्ते का विकास भी एक समान नहीं होता। उनमें जो सबसे विकसित होते हैं, जिन्हें सभी अपना नेता मानते हैं, उन्हीं से सामूहिक नेतृत्व का जन्म होता है। कॉ. चक्रवर्ती ने कहा कि भारत में अविभाजित सीपीआई में काफी ईमानदार, संघर्षशील लोग थे। बावजूद इसके वे सही कम्युनिस्ट पार्टी नहीं बना सके क्योंकि कम्युनिस्ट पार्टी बनाने का संघर्ष उन्होंने नहीं किया। काफी ईमानदारी व संघर्ष की मानसिकता के बावजूद विचार व संस्कृति के मामले में पुराने विचार व संस्कृति के रह जाने की वजह से सीपीआई सही कम्युनिस्ट पार्टी नहीं बन सकी। इसलिए कॉ. शिवदास घोष व उनके साथियों को एक सही कम्युनिस्ट पार्टी बनाने का संघर्ष छेड़ना पड़ा। पार्टी के सही ढंग से संगठित होने, सही कम्युनिस्ट विचार व संस्कृति की पैदाइश होने का मतलब यह नहीं है कि हमारा पतन नहीं हो सकता। पार्टी नेता व कार्यकर्ता यदि स्थिति के परिवर्तन के साथ-साथ इस संघर्ष को और उन्नत स्तर तक नहीं ले जा सकें, तो पार्टी का पतन भी हो सकता है। पार्टी स्थापना दिवस पार्टी के संघर्ष को याद करने, उसे नया रूप प्रदान करने का दिन है। इसलिए पार्टी को उन्नत स्तर पर ले जाने के संघर्ष को छेड़ने की जरूरत है।

कॉ. चक्रवर्ती ने कॉ. शिवदास घोष को उद्धृत करते हुए कहा कि जनता को प्यार करना, जनता के बीच रहना, उसके सुख-दुख का साथी बनना तथा उसके जीवन की ज्वलंत समस्याओं को लेकर आदोलन छेड़ना भी कम्युनिस्ट चरित्र हासिल करने की एक जरूरी शर्त है। इस प्रकार जनता को संगठित करते हुए एक दिन सत्ता पर कब्जा करने के संघर्ष को संचालित करना होगा। उन्होंने कहा कि एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) अपनी शुरूआत से ही जनजीवन के सवालों को लेकर उन्हें संगठित करते हुए संघर्ष कर रही है। आज देश के तमाम प्रदेशों में हमारी पार्टी जन समस्याओं को लेकर आंदोलन विकसित कर रही है। पार्टी ने जन समस्याओं को लेकर 14 मार्च को संसद पर विशाल प्रदर्शन किया। इसके पूर्व आंदोलन के समर्थन में करोड़ों लोगों से हस्ताक्षर लिये गये। आज देश में जन आंदोलन की सख्त जरूरत है। केन्द्र व राज्य सरकारें एक के बाद एक जनविरोधी कदम उठा रही हैं। बिहार पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार विकास की बात कर रहे हैं। जबकि बिहार के लाखों मजदूर विभिन्न प्रदेशों में रोजगार की तलाश में मारे-मारे फिर रहे हैं। नीतीशजी को बताना चाहिए कि राज्य में कितने उद्योग लगे? बथानी टोला नरसंहार पर हाई कोर्ट का फैसला और पीड़ितों का न्याय से वंचित होना राज्य में न्याय के साथ विकास के दावे की मखौल उड़ा रहा है। उन्होंने कहा कि पूंजीवाद की वजह से बेरोजगारी, महंगाई, गरीब किसानों की समस्याएं–महंगी सिंचाई-खाद-बीज, सांस्कृतिक-शैक्षणिक समस्याएं आजादी के पहले से ही थीं। भूमंडलीकरण-उदारीकरण-निजीकरण के आने के बाद इनमें कई गुना बढ़ोतरी हुई है। क्या नीतीशजी भूमंडलीकरण-उदारीकरण-निजीकरण के विरोधी हैं? बिल्कुल नहीं। वे तो अपने राज्य में उन जनविरोधी नीतियों को तत्परता से लागू कर रहे हैं। विकास के नाम पर जो कुछ भी हो रहा है, वह पूंजीपतियों के लिए हो रहा है। इन तमाम जनविरोधी कदमों के खिलाफ संघर्ष की जरूरत है और पूंजीवाद को खत्म किये बिना इन तमाम जन समस्याओं से मुक्ति संभव नहीं है।

सभा की अध्यक्षता एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) बिहार राज्य सचिव कॉ. शिव शंकर ने की।

मई दिवस के अवसर पर श्रमिकों की रैली

कानपुरः उ.प्र. ऑल इण्डिया यूनाइटेड ट्रेड यूनियन सेन्टर की कानपुर इकाई द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक एकजुटता दिवस पूर्ण श्रद्धा-सम्मान के साथ मनाया गया। मई दिवस के अवसर पर रावतपुर बस अड्डे से लेबर कोर्ट तक एक रैली निकाली गई जो लेबर कोर्ट के सामने पार्क में एक सभा में तब्दील हो गई। सभा की अध्यक्षता एआईयूटीयूसी के प्रदेश अध्यक्ष कॉ. राजबली ने की। मुख्य वक्ता एआईयूटीयूसी के राष्ट्रीय सचिवमण्डल सदस्य कॉ. अचिन्त्य सिन्हा ने मई दिवस के इतिहास पर विस्तृत चर्चा की। उन्होंने सभा में उपस्थित सभी कर्मचारियों एवं मजदूरों से मई दिवस के संघर्ष से सीख लेकर केन्द्र व राज्य सरकारों की मजदूर-कर्मचारी विरोधी नीतियों के खिलाफ जोरदार मजदूर आन्दोलन को गठित करने का आह्वान किया। सभा को आगंनबाड़ी कार्यकर्त्री एवं सहायिका वेलफेयर एसोसिएशन की उत्तर प्रदेश अध्यक्षा का. लता शर्मा, एसयूसीआई(सी) के राज्य कमेटी सदस्य का. सपन चटर्जी, एआईयूटीयूसी के प्रदेश उपाध्यक्ष का. धर्मदेव, सहायक सचिव एवं उ.प्र. ग्रामीण स्वास्थ्य कार्यकर्ता आशा यूनियन के प्रदेश अध्यक्ष कॉ. वालेन्द्र कटियार, जेपीए के कॉ. एन के ककोटर, श्री रामरतन, आंगनबाड़ी कार्यकर्त्री हीरावती आदि ने भी सम्बोधित किया। अन्त में मजदूर-कर्मचारियों की समस्याओं से संबंधित एक ज्ञापन श्रमायुक्त, कानपुर के माध्यम से उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री को भेजा गया।

महिलाओं के खिलाफ बढ़ते अत्याचारों पर रोष प्रदर्शन

भोपाल : पूरे म.प्र. में महिलाओं व बच्चियों पर बढ़ते अपराधों के खिलाफ एआईएमएसएस की म.प्र. इकाई द्वारा 3 मई को यहाँ बोर्ड आफिस चौराहे पर राज्य स्तरीय विरोध प्रदर्शन किया गया और तहसीलदार के द्वारा मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा गया। एमएसएस भोपाल प्रभारी जोली सरकार, गुना जिला सचिव संगीता आरबी ग्वालियर जिलाध्यक्ष आभा भुवरकर, सागर से चंद्रा पात्रा, म.प्र. एसयूसीआई(सी) प्रभारी कॉ. उमा विश्वास ने अपनी बात रखी। म.प्र. में महिलाओं पर हो रहे वीभत्स हमले व उत्पीड़न रोकने, नशीले पदार्थों –शराब, स्मैक आदि पर रोक लगाने, मोबाइल, नेट, फिल्मों व विज्ञापनों में अश्लीलता परोसना बंद करने और

महिलाओं की आर्थिक दुर्दशा के लिए जिम्मेदार नीतियाँ बदलने की मांग उठाई गई। प्रदर्शन में गुना, ग्वालियर, भोपाल, जबलपुर, सागर, शिवपुर अशोकनगर, विदिशा, सिहोर से महिलाएं सम्मिलित हुई।

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया की ओर से कॉ. गिरिजेश्वर सिंह द्वारा 3ए/38, डब्ल्यू.ई.ए., करोल बाग, नई दिल्ली-5 से संपादित व प्रकाशित तथा परम्परा प्रिंटिंग प्रेस, बी-70/83, इण्डस्ट्रियल एरिया, लॉरेंस रोड, दिल्ली-35 से मुद्रित, दूरभाषः 011-25726631, E-mail: sarvaharadrishtikon@yahoo.com